ISSN 2249-751X

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तुरामाय

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

सन् 2025-26 ई.

राजा रवि

* विक्रम संवत् 2082 * शक संवत् 1947 * जयहिंद संवत् 78-79

मन्त्री रवि

दैवज्ञ भूषण

पं॰ रामेश्वर दत्त रैणा

राज ज्योतिषी

रजत जयन्ती अङ्क

डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा

फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)

सहाचार्य (सेवानिवृत) ज्योतिष विभाग

केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

वैदिक मन्त्र संग्रह सहित

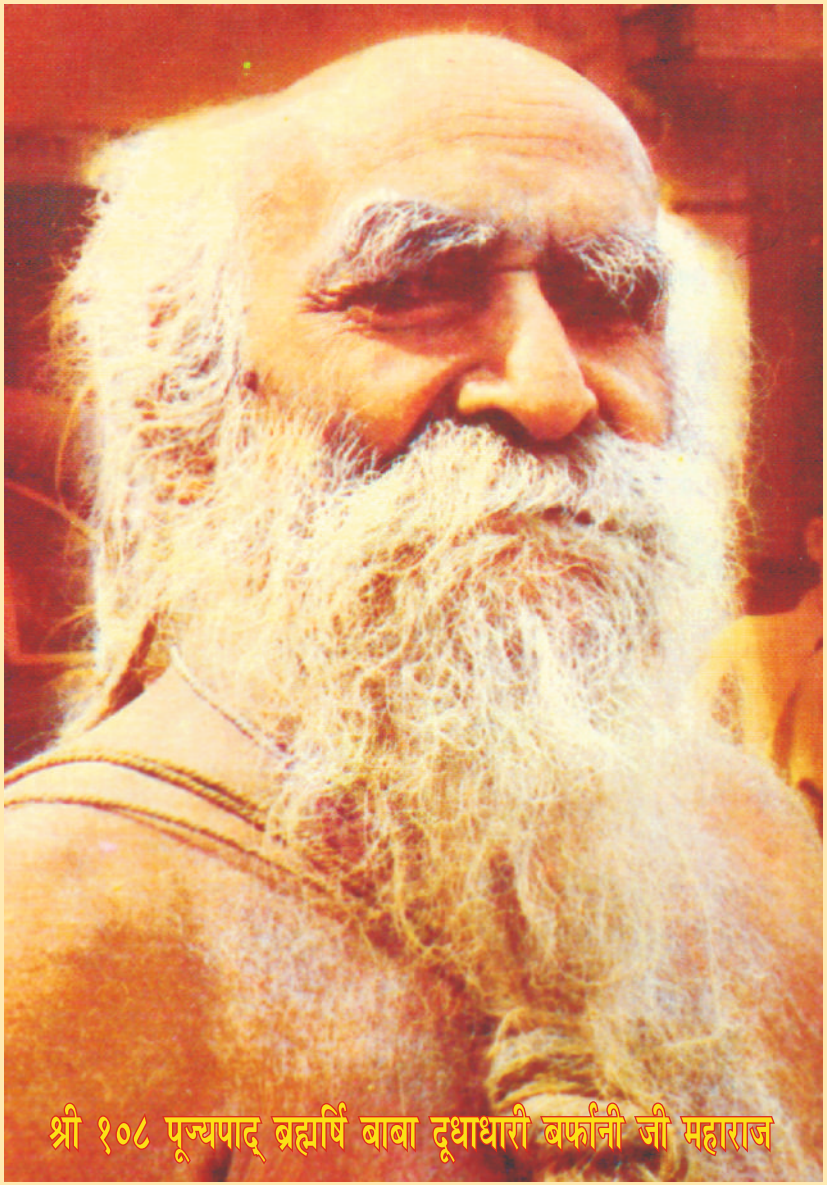

श्री १०८ पूज्यपाद् ब्रह्मर्षि बाबा दूधाधारी बर्फानी जी महाराज

"ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारी महात्मनां प्रशस्तिः।।"

श्री १०८ श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः

दुग्धाधारी यतिवर प्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारी प्रतिपदमहो विश्वतो यज्ञकारी।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मनन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी।।१।।

नाम्नां धाम्नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
पुण्यात्मानो द्विजसुरगवां सर्वदेवावधानाः।
यज्ञैरिष्ट्वा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेते।
धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः।।२।।

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मना-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासतः।
नानातीर्थनिषेवणाद्गुरुकृपामासाद्यगोपालनाद्
देवानां सततार्चनात्पडक्षरजपादष्टाङ्गयोगार्जनात्।।३।।

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बनात्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पित्रर्चनान्नित्यशः।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्नित्यं पुरश्चर्यया
श्रीतस्मार्तमखैः सदेह जगतः कल्याण सञ्चिन्तनात्।।४।।

ब्रह्मषिप्रवरा जगद्गुरुवरा दृष्ट्वैक दृष्टया जगत्
हस्राक्षं जितवन्त इत्थमपि ते जाताः सहस्राध्वराः।
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाशय्यास्तपश्चर्यया
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम्।।५।।

उड्डाङ्गासमवङ्ग मागधरवसाऽऽसाकेत काशी गया
जम्बू श्रीनगर सदूधमपुराम्बाराम आर्यश्रियम्।
राजौरी ह्यखनूर मानससरो जन्द्राह भड्डूगुढा
गङ्गायामुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम्।।६।।

क्षेत्रं नैमिषिकं समेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वरम्
गामं गामहो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
न्यास्थञ्छ्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं महत्
भारश्री वहतां सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम्।।७।।

इति विहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता
श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदुग्धा धारिमहात्मनां
।। प्रशस्तिः समाप्ता ।।

ISSN 2249-751X

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि
विवादस्तेषु केवलम्।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं
चन्द्रार्कौ यत्रसाक्षिणौ॥

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तुरामाय

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

राजा रवि

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

मन्त्री रवि

सन् 2025-26 ई.

* विक्रम संवत् 2082 * शक संवत् 1947 * जयहिंद संवत् 78-79

सलाहकार समिति :
श्रीमती कमलेश रैणा
शास्त्री, बी०एड०
डॉ० शिव प्रसाद रैणा
फलित ज्योततषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)
पं० रविन्द्र रैणा
ज्योतिष विशारद्
डॉ० अव्यक्त रैणा
सिद्धान्त-फलित ज्योतिषाचार्य
विद्यावारिधि (Ph.D) वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ
डॉ० रामदास शर्मा
फलित ज्योततषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)
सहाचार्य ज्योतिष
पं० विनय शास्त्री
ज्योतिष शास्त्री
श्री शुभाङ्ग रैणा

प्रधान सम्पादक :
डॉ० चन्द्रमौलि रैणा
फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
सहाचार्य (सेवानिवृत) ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

सह-सम्पादक :
पं० पीयूष रैणा
ज्योतिर्विद,
अभियन्ता एवं तकनीकी विज्ञ
विविध सम्मान प्राप्त
श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, जम्मू
डॉ० के०एस० चाड़क
एम.एस., ज्योतिष विशारद्

रजत जयन्ती अङ्क

सत्प्रेरका :
महामहिमोपाध्याय प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय
भू.पू. ज्योतिष विभागाध्यक्ष
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)
स्व० प्रो० शुकदेव चतुर्वेदी
भू.पू. निदेशिक ज्योतिष पाठ्यक्रम
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली-16
स्व० डॉ० विहारीलाल वसिष्ठ
भू.पू. अध्यक्ष ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, जम्मू

पञ्चाङ्ग सज्जा विशेषज्ञ :
राजिन्द्र सौगुणियाँ

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)
44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू, दूरभाष : 0191-3555681, मोबाईल : 09419194230, 6005569931
ई-मेल : drcmraina@gmail.com

प्रकाशन वर्ष : पञ्चविंशतिः

मूल्य : 165.00 रुपये

प्रकाशक : मल्होत्रा ब्रदर्ज, पक्का डंगा जम्मू दूरभाष : 94191-83231

All disputes within Jammu Jurisdiction of Courts.

© All rights reserved

॥ नमोऽस्तु रामाय ॥

श्रीदूधाधारी बर्फानी आश्रम

भूपतवाला, हरिद्वार-२४९४१०

परमाध्यक्ष— सन्तश्री प्रभुदासजी महाराज

दिनाङ्क - ०५/१०/२००३

शुभाशंसा

ज्योतिष शास्त्र में हमारे ऋषियों का अनुसन्धान चमत्कृत होता है। गणित, फलित सिद्धान्त आदि वर्गों में विभक्त इस शास्त्र की वैज्ञानिकता हमारे ही देश में नहीं, बल्कि दुनियाभर के लोग स्वीकार करते हैं। उसी प्रक्रिया में पञ्चाङ्गविधा को गणितीय आधार पर तैयार किया जाता है। लौकिक व्यवहारोपयोगी, दैनिक कृत्यों में सहयोगी यह पञ्चाङ्ग परिपाटी हमारे देश में बहुत ही लोकप्रिय है। इस परम्परा के पालन में विद्वान् ज्योतिषी डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन बड़े ही श्रम और लगन के साथ कर रहे हैं। वास्तव में इस विधा को आगे बढ़ाने से ऋषि ऋण का शोधन होता है। इनके पिता पं॰ श्री रामेश्वरदत्त जी रैणा एक ख्यातिप्राप्त राजपण्डित थे। अपने पितृचरण की कीर्तिशृङ्खला में श्री रैणा का यह कृत्य श्लाघनीय है। मैं श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग की सफलता हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए श्री चन्द्रमौलि रैणा के कल्याण हेतु आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। शुभमस्तु।

श्रीसीतारामचरणानुरागी

प्रभुदास

(सन्त प्रभुदास)

नमोऽस्तुरामाय

पुण्य स्मृति

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥ (श्रीमद्भागवद्गीता 12/16)

जो पुरुष अकांक्षा से रहित, बाहर-भीतर से शुद्ध चतुर अर्थात् जिस काम के लिए आया है उसको पूरा कर चुका है एवं पक्षपात से रहित और दु:खों से छूटा हुआ है वह सब आरम्भों का त्यागी मेरा भक्त मुझ को प्रिय है।

परम पूज्य दादा श्री पं॰ मेला राम रैणा जी (राजज्योतिषी एवं राजगुरु) **'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्'** के रजत जयन्ती अङ्क को वैकुण्ठधाम से प्रेमपूर्वक शुभाशीर्वाद दे रहे होंगे क्योंकि सन् 1969 ई. मेरे जन्म दिन की पूजा के उपरान्त अपने अन्त:करण से अपने शुभाशीर्वाद से अभिषिक्त करते हुए कहा था **"तू ज्योतिषी बनेगा"**। उस समय मेरा रूझान ज्योतिषी बनने का नहीं था। पूज्य पिता जी **श्री रामेश्वर दत्त रैणा (राजज्योतिषी)** मुझे आयुर्वेदाचार्य करवाना चाहते थे। बालबोध होने के कारण मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। घर की परिस्थितियाँ बदलीं पूज्य दादा जी का मेरे जन्म दिन के आठवें दिन शरीर शान्त हो गया, वे परमधाम पहुँच गये।

सन् 1972 ई. में मैंने श्री रणवीर केन्द्रिय संस्कृत विद्यापीठ में ज्योतिष अध्ययन के लिए प्रवेश लिया। ज्योतिष विषय कोई सामान्य विषय नहीं अपितु गहण विषय है। उस समय ज्योतिष मेरे लिये एक कन्दरा रूपी था। कन्दरा जिसमें घोर अन्धेरा ही अन्धेरा प्रकाश था ही नहीं। मेरा भाग्य प्रबल था, मुझे पूज्य पिता जी ने पूज्य गुरु जी डॉ. बिहारि लाल शास्त्री जी को सौंप दिया। ज्योतिष रूपी कन्दरा में मैं गुरु जी के साथ चलता रहा। अन्धेरा छटने लगा। गुरु जी की अपार कृपा से जीवन में शनै: शनै: प्रकाश का प्रादुर्भाव होता गया। पूज्य दादा जी का आशीर्वाद फलीभूत होता गया। आज मैं जो भी हूँ दादा जी एवं गुरु जी की कृपा से हूँ।

'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्' का रजत जयन्ती अङ्क आपका है आपके लिये है।

आपका अभिन्न हृदय
चन्द्रमौलि रैणा

नमोऽस्तुरामाय

श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम् का रजत जयन्ती अङ्क समर्पण

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

(श्रीमद्भागवद्गीता 2/71)

जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर **ममतारहित, अहंकार रहित, इच्छारहित** होकर विचरता है वही शान्ति को प्राप्त करता है।

केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर कोट भलवाल, जम्मू, ज्योतिष विभाग के अध्यक्षचर मेरे अनन्य एवं अनन्वय गुरु असीम श्रद्धा-वन्दनास्पद महामनीषी आचार्य प्रवर डॉ॰ बिहारिलाल वासिष्ठ, ज्योतिषाचार्य विद्यावारिधि Ph.D जी को उद्गाढ़-विनय-सम्मान-पुरस्सर समर्पित **"श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्"।**

अकिञ्चन शिष्य
चन्द्रमौलि रैणा

ॐ श्रीगणेशाय नमः

श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्

श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम् का रजत जयन्ती अङ्क प्रकाशित होने जा रहा है ऐसा सुन कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ। धर्म प्रधान जम्मू नगरी से इस प्रकार का सारस्वत कार्य वहाँ की विद्वत् परम्परा का परिचायक भी है। भारतीय पञ्चाङ्ग विश्व के सभी प्रकार के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, प्रमाणिक एवं विस्तृत सूचनाओं से सम्पन्न होते हैं अपने नगर का पञ्चाङ्ग सुलभ होने से दैनिक धार्मिक, व्यावहारिक, सामाजिक एवं पारम्परिक कार्यों में अत्यन्त सरलता हो जाती है अतः यह विशेष कार्य जनाहित में एक सुन्दर कड़ी के रूप में सिद्ध हो रहा है।

निश्चय ही मेरे प्रिय शिष्य डॉ. चन्द्रमौलि रैणा ने इस पञ्चाङ्ग का सम्पादन एवं प्रकाशन कर के एक प्रतिष्ठापरक शास्त्रीय एवं सामाजिक कार्य कर रहे हैं। **"श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्"** के रजत जयन्ती अङ्क प्रकाशन की उपलब्धि के लिये मैं इनको हार्दिक बधाइयों से विभूषित करते हुए शुभाशीर्वाद प्रदान करता हूँ साथ ही बाबा विश्वनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि यह पञ्चाङ्ग अपनी प्रामाणिकता को अक्षुण्य रखते हुए जनता का मार्गदर्शन करने में सतत् अग्रसर रहे। पुनः पञ्चाङ्ग एवं उसके कर्ता की सर्वविध सफलताओं की मङ्गलकामनाओं सहित।

भाद्रपद शुक्ल एकादशी
14 सितम्बर 2024
वाराणसी (उ.प्र.)

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सनातन की विशेषता

आचार्य सतीश शास्त्री जी

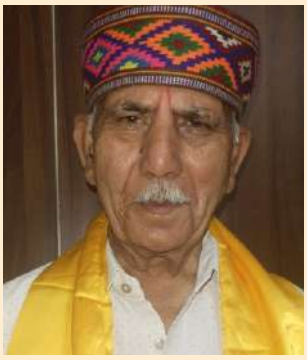

पं. रूपलाल शास्त्री जी

पं. राकेश शास्त्री जी

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे॥

"कर्माप्येकं तस्यदेवस्य सेवा" हमारा एक ही कार्य हो भगवान की सेवा। परमेश्वर तथा उनका दिव्य धाम, ये दोनों ही सनातन हैं और जीव भी सनातन है। सनातन-धाम में परमेश्वर तथा जीव की सञ्युक्त सङ्गति ही मानव जीवन की सार्थकता है। भगवान जीवों पर अत्यन्त दयालु रहते हैं क्योंकि वे उनके आत्मज हैं। भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में घोषित किया है **"सर्वयोनिषु ..... अहं बीजप्रदः पिता"** मैं सब का पिता हूँ।

सनातन धर्म किसी साम्प्रदायिक धर्म पद्धति का सूचक नहीं है यह तो नित्यपरमेश्वर के साथ नित्य जीवों के नित्य कर्म-धर्म का सूचक है। "जिसका न आदि है और न अन्त" वह सनातन है। अंग्रेजी का **'रिलीजन'** शब्द सनातन धर्म से भिन्न है **'रिलीजन'** से विश्वास का भाव सूचित होता है और विश्वास परिवर्तित हो सकता है लेकिन सनातन धर्म उस कर्म का सूचक है जो बदला नहीं जा सकता, जैसे जल से जल की तरलता विलग नहीं की जा सकती, न अग्नि से ऊष्मा विलग की जा सकती है इसी प्रकार जीव से उसके नित्य कर्म को विलग नहीं किया जा सकता। सनातन धर्म जीव का शाश्वत अङ्ग है, सनातन धर्म विश्व के समस्त लोगों का ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड के समस्त जीवों का है जीवों के साथ शाश्वत चलता रहता है।

अखिल भारतीय सनातन धर्म पथ परिषद् मुख्य केन्द्र पठानकोट पञ्जाब एक धार्मिक पञ्जीकृत संस्था है जो सम्पूर्ण भारत में सनातन धर्म के प्रचार के लिए अग्रसर रहती है, जम्मू-कश्मीर राज्य के प्रधान प्रोफेसर चन्द्रमौलि रैणा जी द्वारा प्रकाशित **'श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम्'** जो ज्योतिष और कर्मकाण्ड पर आधारित है। इस वर्ष अपने 25 वर्ष पूरे कर रहा है एतदर्थ प्रो. रैणा जी को सनातन धर्म पथ परिषद् के सभी सदस्य हार्दिक बधाई एवं शुभकनायें देते हैं। प्रो. रैणा जी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित **'कश्यप संहिता'** एवं **'बावा अमरनाथ बर्फानी जी की पूजा पद्धति"'** भी प्रकाशित हुई हैं। एक बार फिर हार्दिक बधाई।

सनातन धर्म पथ परिषद् के सभी सदस्य

कश्यप संहिता

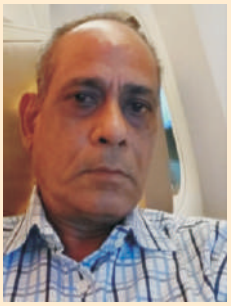

संहिता फलित ज्योतिष का प्रधान अंग है। यह वह ग्रंथ है जिसमें ग्रहचार, संवत्सर, तिथिवार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त लक्षण, संक्रान्ति लक्षण, गोचर विचार, संस्कार, विवाह मुहूर्त, यात्रा, गृहप्रवेश, वास्तु लक्षण, शिथिली जननदोष, शकुन, जीवनोपयोगी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। और इस प्रकार यह ग्रंथ 'सम एवं हित' के संयोजन से बने नाम संहिता को सार्थक करता है।

संहिता किसी भी विषय पर हो सकती है होती भी है आदि। ज्योतिष जगत में बृहत्संहिता, भद्रबाहु संहिता, नारद संहिता, गर्ग संहिता, वृद्ध वशिष्ठ संहिता, भृगु संहिता अनेक ग्रंथ सुप्रसिद्ध है तथा सुलभ भी है। तथापि यह भी सत्य है कि अनेक संहिता ग्रंथों की हस्त लिखित प्रतियां किसी पुस्तकालय में, किसी विद्धान के व्यक्तिगत संग्रह में सुरक्षित है तथा सर्व साधारण के लिये सुगमता से उपलब्ध नहीं हैं। ऐसा ही एक संहिता ग्रंथ है 'कश्यपसंहिता'। यह ग्रंथ अभी तक अनुपलब्ध था जिसका उद्धार डा. चन्द्रमौलि रैणा जी के अथक प्रयासों तथा कठिन परिश्रम से सम्भव हो पाया है। उल्लेखनीय है कि इसी नाम 'कश्यपसंहिता' से एक ग्रंथ अबसे लगभग 72 वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका है परन्तु संहिता ग्रंथ आयुर्वेद सम्बन्धी है शिशुओं के रोग पालन पोषण सम्बन्धी विषयों का विशाल ग्रंथ है। अत: इसका मूल विषय कौमारभृत्य है।

डा. रैणा द्वारा अनुवादित तथा सम्पादित 'कश्यपसंहिता' ज्योतिष विषयक है। इसके 49 अध्यायों में फलित ज्योतिष के प्राय: सभी अंगों का समावेश हुआ है। ग्रहचार, ग्रहों का स्वभाव, नक्षत्रों की विभिन्न संज्ञायें, वास्तु सम्बन्धी गहन सूत्र, शकुन, धर्म कार्यों का प्रारम्भ काल आदि अनेक विषय वर्णित है। कतिपय सूत्र ऐसे है जो ज्योतिष की अन्य अनुदित पुस्तकों में देखने में नहीं आते।

अनुवाद तथा सम्पादन सर्वाधिक कठिन कार्य होता है पाठ का सरलीकरण ग्रंथ की सार्थकता उसके 1600 से अधिक संस्कृत श्लोकों के अनुवाद की सरल सुगम भाषा में प्रस्तुति है। अनुवादक ने अत्याधिक परिश्रम पूर्वक जहां इसे सर्वसाधारण हेतु ग्राह्य बना दिया है वहीं शोधार्थियों विद्या विनोद रसिकों के लिये विभिन्न पांडुलिपियों के पाठान्तर फुट नोटस में दे दिये है। इससे भविष्य के शोधार्थियों का कार्य अत्यन्त सरल हो गया है। एक और सरल पाठ तथा दूसरी और अतिगम्भीर विवेचन, ऐसी प्रस्तुति डॉ. रैणा समान विद्वान द्वारा ही सम्भव थी, इसमें तनिक भी अतिश्योक्ति नहीं है। किसी भी वर्ग और स्तर का पाठक इस ग्रंथ का अनुशीलन समान रुप से कर सकता है। यह इसकी अतिविशिष्टता है। दूसरी एक और विशिष्टता जिसने मुझे आकर्षित किया वह है अनुवाद का पुनरावृति दोष रहित होना। किसी भी स्थान पर किसी भी प्रकार से किसी भी अर्थ को व्यर्थ ही वारम्बार रिपीट नहीं किया गया है, अनावश्यक विस्तार नहीं दिया गया है तथापि विषय को हृदयगंम करने में अड़चन अनुभव नहीं होती। ग्रन्थ में पुरोवाक् विश्वप्रसिद्ध ज्योतिष दैवज्ञ भूषण प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी ने लिखा है। ग्रन्थ को शोभायमान कर रहा है, सहसम्पादक डॉ. वर्चस्काम शास्त्री जो परमादरणीय डॉ. बिहारि लाल जी के पौत्र हैं उनका कार्य भी प्रशंसनीय है उनको भी हार्दिक बधाई शुभकामनाएं एवं साधुवाद।

डा. रैणा अपने हस्तकमलों से भविष्य में भी अन्य विलुप्त, अप्रकाशित ग्रंथों को प्रकाश में लाकर ज्योतिष जगत को समृद्ध करते रहेंगे, यही अभिलाषा तथा मनोकामना है।

प्रवीण कुमार जैन

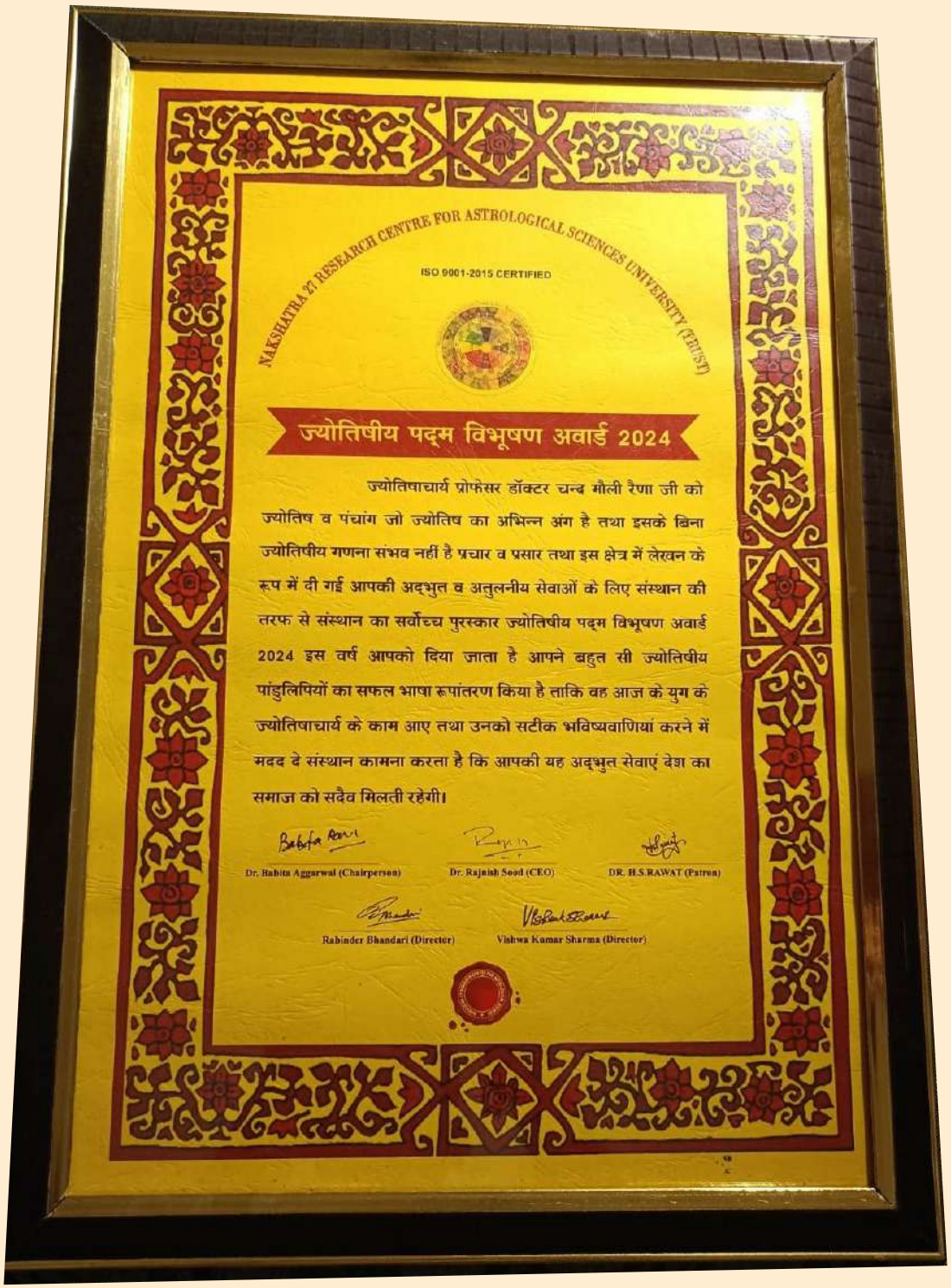

NAKSHATRA JYOTI RESEARCH CENTRE FOR ASTROLOGICAL SCIENCES UNIVERSITY (TRUST)

ISO 9001-2015 CERTIFIED

ज्योतिषीय पद्म विभूषण अवार्ड 2024

ज्योतिषाचार्य प्रोफेसर डॉक्टर चन्द मौली रैणा जी को ज्योतिष व पंचांग जो ज्योतिष का अभिन्न अंग है तथा इसके बिना ज्योतिषीय गणना संभव नहीं है प्रचार व प्रसार तथा इस क्षेत्र में लेखन के रूप में दी गई आपकी अद्भुत व अतुलनीय सेवाओं के लिए संस्थान की तरफ से संस्थान का सर्वोच्च पुरस्कार ज्योतिषीय पद्म विभूषण अवार्ड 2024 इस वर्ष आपको दिया जाता है आपने बहुत सी ज्योतिषीय पांडुलिपियों का सफल भाषा रूपांतरण किया है ताकि वह आज के युग के ज्योतिषाचार्य के काम आए तथा उनको सटीक भविष्यवाणियां करने में मदद दे संस्थान कामना करता है कि आपकी यह अद्भुत सेवाएं देश का समाज को सदैव मिलती रहेगी।

Dr. Babita Aggarwal (Chairperson) | Dr. Rajnish Sood (CEO) | DR. H.S.RAWAT (Patron)

Rabinder Bhandari (Director) | Vishwa Kumar Sharma (Director)

विषय सूची

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख व्रत पर्व त्योहार एवं अवकाश	12
2.	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत	16
3.	गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल	17
4.	गण्डमूल विचार	17
5.	एकादशी व्रत	18
6.	श्रीसत्यनारायण व्रत	18
7.	अमावस्याएँ	18
8.	प्रदोष व्रत	18
9.	पितृ पक्ष में श्राद्ध	19
10.	महापुरुषों के जन्मदिन	19
11.	जम्मू कश्मीर के मेले	20
12.	हिमाचल प्रदेश के मेले	20
13.	जैन व्रत पर्व व उत्सव	21
14.	दशमहाविद्या जयन्तियाँ	21
15.	पर्व श्री पिण्डोरी धाम (गुरुदासपुर)	21
16.	दशावतार जयन्तियाँ	22
17.	श्री कुलदेव बावा कैलख देव जी ठठ्र जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	22
18.	मुस्लिम त्यौहार	22
19.	क्रिश्चियन त्यौहार	22
20.	राहु काल वर्णन	22
21.	पञ्चक आरम्भ तथा समाप्ति काल	23
22.	पञ्चक विचार	23
23.	निरयण संक्रान्तियाँ	24
24.	गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान	24
25.	श्रीकुलदेव रैणा विरादरी सूञ्जवाँ जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	23
26.	सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टा मिनटों में	24
27.	ग्रहों की वक्री-मार्गी	26
28.	ग्रहों का उदयास्त	26
29.	सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्य आदि योग	27
30.	चन्द्रमा का नक्षत्र चरण प्रवेश वर्ष 2025-26	32
31.	राजा-मन्त्री आदि का विवरण	45
32.	'सिद्धार्थ' नामक संवत्सर का फल	45
33.	आर्द्राप्रवेश लग्न	47
34.	मेषादि जन्मलग्न शुभाशुभ फल	48
35.	शेयर बाजार वर्ष 2025-26	51
36.	ग्रहों के आईने में देश की दशा और दिशा वर्ष 2025-26	57
37.	बारह राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश	68
38.	ग्रहण विवरण	102
39.	श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग ज्योतिष कार्यालय के नियम	105
40.	**वैदिक मन्त्र**	106-181
	(1) अथ शांतिः पाठः	106
	(1) आत्मपूजा	107
	(2) स्वस्तिवाचनम्	108
	(3) श्री गौरीगणेशपूजा	110
	(4) श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	112
	(5) पञ्चगव्य निर्माण मन्त्राः	113
	(6) मण्डप प्रोक्ष मन्त्राः	113

क्रमाङ्क विषय	पृष्ठ संख्या
(7) यज्ञारम्भे ध्वजारोहणपुरःसरं शिलान्यासः	113
(8) अथ पाप घटदान विधिः	114
(9) अथ सर्वप्रायश्चित्त-प्रयोगः	117
(10) अथ गौर्यादि-षोडश-मातृकानां पूजनमावाहनञ्च	120
(11) अथ वसोर्द्धारा-पूजनम्	121
(12) अथ प्रायश्चित्ताङ्ग-विष्णुपूजाप्रयोगः	122
(13) अथ विष्णु-श्राद्धम्	122
(14) अथ दश महादानम्	124
(15) अथ स्वस्तिपुण्याहवाचनम्	125
(16) ततः पुण्याहवाचनम्	127
(17) अथ नान्दी-श्राद्धम्	134
(18) अथ वृद्धिश्राद्धारम्भः	134
(19) अथ ब्राह्मणवरणम्	137
(20) अथ वरुणश्राद्धम्	139
(21) अथ जलयात्रा प्रयोगः	139
(22) अथ स्थलमातृका-स्थापनम्	142
(23) मध्यकलशे वरुणस्य विशेष-पूजनम्	142
(24) अथ वर्द्धिनीकलश स्थापनम्	145
(25) अथ मण्डप-प्रवेशम्	146
(26) अथ वास्तु-पूजनम्	148
(27) अथ मूर्तिप्राणप्रतिष्ठा	153
(28) अथ मण्डप-पूजनम्	153
(29) अथ दिक्पालद्वारपूजा	155
(30) अथ सर्वभूतेभ्यो बलिदानं	156
(31) मण्डपस्यप्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रपूजनम्	157
(32) अथ नारायणपूजा	159
(33) अथ महालक्ष्मी पूजनम्	160
(34) अथ महालक्ष्मी सूक्तम्	161
(35) अथ अग्निस्थापनम्	162
(36) अथ ग्रहाणामावाहनं पूजनं च	163
(37) अथ ग्रहदक्षिण-पार्श्वेऽअधिदेवतास्थापनम्	163
(38) अथ प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहाणां वामपार्श्वे	164
(39) अथ ग्रहणामुत्तरे लोकपालानां स्थापनम्	164
(40) अथ मण्डल बाह्ये इन्द्रादि दशदिक्पालानामावाहनम	164
(41) क्षमापनम्	165
(42) अथ योगिनी-पूजनम्	166
(43) अथ क्षेत्रपाल-पूजनम्	166
(44) अथ पंञ्चाङ्गाधिष्ठातृदेवपूजनम्	167
(45) अथ ऋषि-पूजनम्	168
(46) अथ होमविधिः तत्रादौ कुशण्डिका	168
(47) आज्येन प्राजापत्यहोमः	170
(48) चरु-होमारम्भः	170
(49) अथ नवग्रह-होमः	171
(50) विशेष होमः	175
(51) अथ उत्तरपूजा	176
(52) अथ स्विष्टकृद्धोमः	176
(53) व्याहृति-होमः	176
(54) प्रायश्चित्त-होमः	176
(55) बलिदानम्	177
(56) पूर्णाहुति मन्त्राः	177
(57) वसोर्द्धारामन्त्राः	178
(58) देवताग्नि विसर्जनम्	180
(59) पौराणिकविसर्जनम्	180
(60) अथ श्रीसूर्यार्घ्यदानम्	181

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
41.	तुलसी की महिमा	182
42.	पञ्चाङ्ग विवरण सन् 2025-26 ई.	183
43.	तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा॰स्टै॰ टाईम) सन् 2025-26 ई.	207
44.	चन्द्रोदयास्त सन् 2025-26 ई.	219
45.	पञ्चांग विवरण का शेष भाग	221
56.	श्री महालक्ष्मी पूजन 'दीपावली पर्व' मुहूर्त 2025 ई.	225
47.	नवग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र	226
48.	दैनिक ग्रह स्पष्ट	227
49.	होम में अग्निवास विचार	240
50.	शुभ विवाह मुहूर्त्त	241
51.	अथ त्रिबलशुद्धि कोष्ठक सम्वत् 2082 (अप्रैल 2025 से मार्च 2026 तक)	250
52.	विवाह मुहूर्त्त विवेचन	256
53.	मुण्डन मुहूर्त्त	257
54.	शिलान्यास मुहूर्त्त	257
55.	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त	258
56.	जीर्ण (पुरातन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त	258
57.	नया-पुराना वाहन क्रय मुहूर्त्त	259
58.	विपिणि मुहूर्त्त	261
59.	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त	262
60.	सर्वदेवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त	263
61.	रामायण आदि कथा तथा चुनाव में खड़े होने के मुहूर्त्त	264
62.	श्रावण के सोमवार, रक्षाबन्धन निर्णय तथा श्रावणी उपाकर्म विधान	264
63.	वर-वधु अष्टकूट कुण्डली मिलान का ज्योतिष शास्त्रीय विवेचन	265
64.	गुण मिलान सारिणी	280
65.	जन्माक्षर चक्र	288
66.	नक्षत्रयोग कष्टावली	290
67.	विविधमुहूर्त्त	292
68.	अष्टकूट दोष परिहार	296
69.	विवाह संस्कार	300
70.	यात्रा मुहूर्त का विचार	305
71.	गृहारम्भमुहूर्त विचार	306
72.	जननाशौच एवं मरणाशौच की व्यवस्था	310
73.	विंशोत्तरी महादशा में सभी ग्रहों का प्रत्यन्तर	311
74.	विंशोत्तरी महादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रम्	314
75.	विंशोत्तरीदशा योगिनीदशा ज्ञान चक्र	314
76.	वर्षफल निर्माण विधि	314
77.	वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)	316
78.	वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी	317
79.	गण्डमूलादि जन्म विचार	318
80.	विभिन्न अङ्गों पर पल्ली पतन विचार	319
81.	दैनिक लग्न सारिणी (जम्मू)	320-331
82.	ग्रहों के दान, दान समय, जन-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र	332
83.	स्वप्न विचार	332
84.	कर्जे से मुक्ति पाने के लिए श्रीगणेशमन्त्र विधान	334
85.	ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्	334
86.	प्रश्न करने का विधान (गर्गाचार्यमत से)	335
87.	नव ग्रहों की समिधाएँ	335

प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं अवकाश (सन् 2025-26 ई॰)

जनवरी सन् 2025 ई.

पञ्चक प्रारम्भ 10:47	3 जनवरी शुक्र
गण्डमूल 19:06 से	6 जनवरी सोम
पञ्चक समाप्त 17:50	7 जनवरी मंगल
गण्डमूल	7 जनवरी मंगल
गण्डमूल 16:30 तक	8 जनवरी बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	10 जनवरी शुक्र
प्रदोष व्रत	11 जनवरी शनि
श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत	13 जनवरी सोम
माघ स्नानारम्भ	13 जनवरी सोम
मकर संक्रान्ति	14 जनवरी मंगल
सूर्य मकर में 8:54	14 जनवरी मंगल
निरयण उत्तरायण शुरू	14 जनवरी मंगल
गण्डमूल 10:28 से	15 जनवरी बुध
सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गण्डमूल	16 जनवरी गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी (भुग्गा व्रत)	17 जनवरी शुक्र
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	21 जनवरी मंगल
भारतीय माघारम्भः	21 जनवरी मंगल
सुभाषचन्द्रबोस जयंती	23 जनवरी गुरु
पुण्यतिथि पं. रामेश्वर दत्त रैणा (राजज्योतिषी अखनूर)	24 जनवरी शुक्र
गण्डमूल 31:08 से	24 जनवरी शुक्र
षट्तिला एकादशी व्रत	25 जनवरी शनि
गण्डमूल	25 जनवरी शनि
तिल द्वादशी, गणराज्य दिवस	26 जनवरी रवि
गण्डमूल	26 जनवरी रवि
प्रदोष व्रत	27 जनवरी सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	27 जनवरी सोम
गण्डमूल 9:02 तक	27 जनवरी सोम
देवपितृकार्येऽमावस	29 जनवरी बुध
मौनी अमावस	29 जनवरी बुध
माघ शुक्ल प्रतिपदा	30 जनवरी गुरु
पञ्चक प्रारम्भ 18:35	30 जनवरी गुरु
श्रीबल्लभ जयन्ती	30 जनवरी गुरु
गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	30 जनवरी गुरु

फरवरी

श्रीगौरी तृतीया व्रत	1 फरवरी शनि
तिल चतुर्थी	1 फरवरी शनि
वसन्त पञ्चमी	1 फरवरी शनि
गण्डमूल 24:52 से	2 फरवरी रवि
पञ्चक समाप्त 23:17	3 फरवरी सोम
गण्डमूल	3 फरवरी सोम
पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी	4 फरवरी मंगल
गण्डमूल 21:50 तक	4 फरवरी मंगल
श्रीभीमाष्टमी, दुर्गाष्टमी	5 फरवरी बुध
श्रीदुर्गानवमी	6 फरवरी गुरु
गुप्त नवरात्रे समाप्त	6 फरवरी गुरु
जया एकादशी व्रत	8 फरवरी शनि
श्रीभीष्म द्वादशी	9 फरवरी रवि
श्रीभीष्मतर्पणम्	9 फरवरी रवि
प्रदोष व्रत	10 फरवरी सोम
श्रीगुरुहरराय जयन्ती	10 फरवरी सोम
गण्उमूल 18:34 से	11 फरवरी मंगल
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी बुध
सूर्य कुम्भ में रात्रि 9:54	12 फरवरी बुध
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	12 फरवरी बुध
गण्डमूल, श्रीसत्यनारायण व्रत	12 फरवरी बुध
पूर्णिमा व्रत	12 फरवरी बुध
फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा	13 फरवरी गुरु
गण्उमूल 21:07 तक	13 फरवरी गुरु
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	16 फरवरी रवि
चन्द्रोदय जम्मू 21:49	16 फरवरी रवि
सायनसूर्य मीन में 15:15	18 फरवरी मंगल
वसन्त ऋतु प्रारम्भ	18 फरवरी मंगल
भारतीय फालगुनारम्भः	20 फरवरी गुरु
गण्डमूल 15:54 से	21 फरवरी शुक्र
श्रीरामदाय जयन्ती	22 फरवरी शनि
गण्डमूल	22 फरवरी शनि
गण्डमूल 18:43 तक	23 फरवरी रवि
विजया एकादशी व्रत	24 फरवरी सोम
प्रदोष व्रत	25 फरवरी मंगल
महाशिवरात्रि व्रत	26 फरवरी बुध
पंचक प्रारम्भ 28:36	26 फरवरी बुध
देवपितृकार्येऽमावस	27 फरवरी गुरु
फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	28 फरवरी शुक्र

मार्च

श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	1 मार्च शनि
गण्डमूल 8:59 से	2 मार्च रवि
पञ्चक समाप्तिः 6:36	3 मार्च सोम
गण्डमूल 28:30 तक	3 मार्च सोम
यज्ञवल्क्य जयन्ती	4 मार्च मंगल
होलाष्टक प्रारम्भ	7 मार्च शुक्र
आमलकी एकादशी व्रत	10 मार्च सोम
गण्डमूल 24:51 से	10 मार्च सोम

प्रदोष व्रत, गण्डमूल	11 मार्च मंगल
गण्डमूल 28:05 तक	12 मार्च बुध
श्रीसत्यनारायण व्रत	13 मार्च गुरु
मेला श्रीश्याम जी (खाटु)	13 मार्च गुरु
होलिका दहन भद्रा बाद	13 मार्च गुरु
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र
सूर्य मीन में सायं 6:49	14 मार्च शुक्र
पूर्णिमा व्रत	14 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	15 मार्च शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	17 मार्च सोम
चन्द्रोदय जम्मू 21:30	17 मार्च सोम
शुक्र तारा अस्त पश्चिम में 18:37	20 मार्च गुरु
गण्डमूल 23:32	20 मार्च गुरु
शीतला पूजन, गण्डमूल	21 मार्च शुक्र
भारतीय चैत्रारम्भः	22 मार्च शनि
शुक्र तारा उदित पूर्व में	23 मार्च रवि
पापामोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	25 मार्च मंगल
पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	26 मार्च बुध
पञ्चक प्रारम्भ 15:14	26 मार्च बुध
प्रदोष व्रत	27 मार्च गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	27 मार्च गुरु
देवपितृकार्येऽमावस	29 मार्च शनि
गण्डमूल 19:26 से	29 मार्च शनि
श्रीविक्रम संवत् 2081 सम्पूर्णम्	29 मार्च शनि
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	30 मार्च रवि
नव चान्द्रसंवत्सर	30 मार्च रवि
वासन्त नवरात्र प्रारंभ	30 मार्च रवि
घट स्थापनम्	30 मार्च रवि
पञ्चक समाप्त 16:35	30 मार्च रवि
ज्योतिष दिवस	30 मार्च रवि
गौरी तृतीया	31 मार्च सोम
मत्स्योत्पत्तिः	31 मार्च सोम
शिवशक्ति पूजा	31 मार्च सोम

अप्रैल

श्री लक्ष्मी पञ्चमी	2 अप्रैल बुध
स्कन्द षष्ठी व्रत	3 अप्रैल गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी	5 अप्रैल शनि
अशोक कलिका प्राशन	5 अप्रैल शनि
श्रीराम नवमी	6 अप्रैल रवि
व्रतबन्ध दशमी	7 अप्रैल सोम
कामदा एकादशी व्रत	8 अप्रैल मंगल
प्रदोष व्रत, जैनमहाबीर जयन्ती	10 अप्रैल गुरु
श्रीपूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यपरायण व्रत	12 अप्रैल शनि
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रैल रवि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	16 अप्रैल बुध
चन्द्रोदय जम्मू 22:09	16 अप्रैल बुध
अनुसूया जयन्ती	17 अप्रैल गुरु
श्रीगुरु तेगबहादुर जयन्ती	18 अप्रैल रवि
श्रीगुरु अर्जुनदेव जयन्ती	20 अप्रैल रवि
भारतीय वैशाख प्रारम्भ	21 अप्रैल सोम
पञ्चक प्रारम्भ 24:30	22 अप्रैल मंगल
वरूथिनी एकादशी व्रत	24 अप्रैल गुरु
श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	24 अप्रैल गुरु
प्रदोष व्रत	25 अप्रैल शुक्र
पञ्चक समाप्त 27:39	26 अप्रैल शनि
मासिक शिवरात्रि व्रत	26 अप्रैल शनि
देवपितृकार्येऽमावस	27 अप्रैल रवि
वैशाख शुक्ल प्रतिपदा	28 अप्रैल सोम
श्रीगुरु अंगददेव जयन्ती	28 अप्रैल सोम
श्रीपरशुराम जयन्ती	29 अप्रैल मंगल
श्रीशिवाजी जयन्ती	29 अप्रैल मंगल
अक्षय तृतीया	30 अप्रैल बुध

मई

श्रीशंकराचार्य जयन्ती, श्री रामानुज जयन्ती	2 मई शुक्र
श्रीगङ्गोत्पत्तिः	3 मई शनि
श्री जानकी जयन्ती	5 मई सोम
श्री टैगोर जयन्ती	7 मई बुध
मोहिनी एकादशी व्रत	8 मई गुरु
प्रदोष व्रत	9 मई शुक्र
श्रीगुरु अमरदास जयन्ती	11 मई रवि
श्री बुद्ध जयन्ती, पूर्णिमा व्रत	12 मई सोम
श्रीसत्यनारायण व्रत, कूर्मोत्पत्तिः	12 मई सोम
वैशाख स्नान पूर्तिः	12 मई सोम
धर्म प्रीत्यर्थं जलकुंभदानम्	12 मई सोम
ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा	13 मई मंगल
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई बुध
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	16 मई शुक्र
चन्द्रोदय जम्मू 22:43	16 मई शुक्र
पञ्चक प्रारम्भ 7:36	20 मई मंगल
भारतीय ज्येष्ठारम्भः	22 मई गुरु
अपरा एकादशी व्रत	23 मई शुक्र
शनि प्रदोष व्रत	24 मई शनि
पञ्चक समाप्ति 13:48	24 मई शनि
मासिक शिवरात्रि व्रत	25 मई रवि
शनैश्चर जयन्ती	26 मई सोम
पितृकार्येऽमावस	26 मई सोम
देवकार्येऽमावस	27 मई मंगल
रम्भा व्रत	29 मई गुरु
श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती	29 मई गुरु

जून

श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीधूमावती जयन्ती	3 जून मंगल
श्रीगङ्गा दशहरा	5 जून गुरु
निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त)	6 जून शुक्र

निर्जला एकादशी व्रत (वैष्णव)	7 जून शनि
प्रदोष व्रत, वट-सावित्री व्रतारम्भ	8 जून रवि
श्रीसत्यनारायण व्रत	10 जून मंगल
श्रीपूर्णिमा व्रत, सन्त कबीर जयन्ती	11 जून बुध
आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा	12 जून गुरु
श्रीगुरुहरगोविन्द जयन्ती	12 जून गुरु
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	14 जून शनि
चन्द्रोदय जम्मू 22:12	14 जून शनि
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून रवि
पञ्चक प्रारम्भ 13:09	16 जून सोम
पञ्चक समाप्त 21:45	20 जून शुक्र
योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	21 जून शनि
योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	22 जून रवि
भारतीय आषाढ़ प्रारम्भ	22 जून रवि
सोम प्रदोष व्रत	23 जून सोम
देवपितृकार्येऽमावस	25 जून बुध
आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा	26 जून गुरु
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	26 जून गुरु
श्री जगदीश रथ यात्रा	27 जून शुक्र
स्कन्दषष्ठी	30 जून सोम
जुलाई	
श्रीदुर्गाष्टमी	3 जुलाई गुरु
श्रीदुर्गानवमी	4 जुलाई शुक्र
गुप्त नवरात्र समाप्त	4 जुलाई शुक्र
हरिशयनी एकादशी व्रत	6 जुलाई रवि
भौम प्रदोष व्रत	8 जुलाई मंगल
श्रीगुरु पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा	10 जुलाई गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत	10 जुलाई गुरु
श्रावण कृष्ण प्रतिपदा	11 जुलाई शुक्र
श्रावण नक्तव्रतारम्भ:	11 जुलाई शुक्र
पञ्चक प्रारम्भ 18:52	13 जुलाई रवि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	14 जुलाई सोम
चन्द्रोदय 22:04	14 जुलाई सोम
नागपञ्चमी (मरुप्रदेशे)	15 जुलाई मंगल
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई बुध
पञ्चक समाप्त 27:39	17 जुलाई गुरु
श्रीगुरुहरकिशन जयन्ती	19 जुलाई शनि
कामिका एकादशी व्रत	21 जुलाई सोम
भौम प्रदोष व्रत	22 जुलाई मंगल
भारतीय श्रावण प्रारम्भ	23 जुलाई बुध
देवपितृकार्येऽमावस, हरियाली अमावस	24 जुलाई गुरु
श्रावण शुक्ल प्रतिपदा	25 जुलाई शुक्र
मधुस्रवा तृतीया	27 जुलाई रवि
वरद चतुर्थी, दूर्वागणपति व्रत	28 जुलाई सोम
नागपञ्चमी, नागदंष्ट व्रत	29 जुलाई मंगल
कलकी जयन्ती	30 जुलाई बुध
शीतला, तुलसी जयन्ती	31 जुलाई गुरु
अगस्त	
श्रीदुर्गाष्टमी, लोकमान्यतिलक पुण्यतिथि	1 अगस्त शुक्र
पवित्रा एकादशी व्रत	5 अगस्त मंगल
प्रदोष व्रत	6 अगस्त बुध
श्रीसत्यनारायण व्रत, हयग्रीव जयन्ती	8 अगस्त शुक्र
रक्षाबन्धन (रक्खड़ी)	9 अगस्त शनि
पूर्णिमा व्रत पुण्यञ्च	9 अगस्त शनि
पञ्चक प्रारम्भ 26:10	9 अगस्त शनि
भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा	10 अगस्त रवि
संकष्ट चतुर्थी व्रत	12 अगस्त मंगल
चन्द्रोदय जम्मू 21:13	12 अगस्त मंगल
पञ्चक समाप्त 9'06	14 अगस्त गुरु
हलषष्ठी, चन्दनषष्ठी	14 अगस्त गुरु
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त)	15 अगस्त शुक्र
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त शुक्र
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अगस्त शनि
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	16 अगस्त शनि
गुग्गा नवमी	17 अगस्त रवि
मेल रैणा ब्राह्मण बिरादरी	17 अगस्त रवि
सूञ्जवाँ, जम्मू	17 अगस्त रवि
अजा एकादशी व्रत	19 अगस्त मंगल
वत्स पूजा, जैन पर्युषण	19 अगस्त मंगल
प्रदोष व्रत	20 अगस्त बुध
मासिक शिवरात्रि व्रत	21 अगस्त गुरु
कुशाग्रहणी अमावस, पितृकार्येऽमावस	22 अगस्त शुक्र
शनैश्चरी अमावस	23 अगस्त शनि
देवकार्येऽमावस, श्रीशक्ति पूजा	23 अगस्त शनि
भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा	24 अगस्त रवि
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब	24 अगस्त रवि
प्रथम प्रकाश दिवस	24 अगस्त रवि
श्रीवराह जयन्ती	25 अगस्त सोम
हरितालिका तीज व्रत	26 अगस्त मंगल
सिद्धि विनायक चतुर्थी	27 अगस्त बुध
चन्द्रदर्शन निषेध	27 अगस्त बुध
ऋषि पञ्चमी, नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेशे	28 अगस्त गुरु
संवतसरी महापर्व (जैन)	28 अगस्त गुरु
सूर्यषष्ठी, स्कन्ददर्शनम्	29 अगस्त शुक्र
दूर्वाष्टमी, श्रीराधाष्टमी	31 अगस्त शनि
दधीचि ऋषि जयन्ती	31 अगस्त शनि
सितम्बर	
श्रीचन्द्रनवमी (उदासीनसम्प्रदाय)	1 सितम्बर सोम
पद्मा एकादशी व्रत	3 सितम्बर बुध
वामन द्वादशी	4 सितम्बर गुरु
प्रदोष व्रत	5 सितम्बर शुक्र
पञ्चक शुरू 11:20	6 सितम्बर शनि
श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा	7 सितम्बर रवि
श्रीसत्यनारायण व्रत, श्राद्धपूर्णिमा	7 सितम्बर रवि
चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	7 सितम्बर रवि
आश्विन कृष्ण प्रतिपदा	8 सितम्बर सोम

प्रतिपदा का श्राद्ध	8 सितम्बर सोम
द्वितीया का श्राद्ध	9 सितम्बर मंगल
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	10 सितम्बर बुध
चन्द्रोदय 20:24 जम्मू	10 सितम्बर बुध
पञ्चक समाप्त 16:03	10 सितम्बर बुध
तृतीया का श्राद्ध	10 सितम्बर बुध
चतुर्थी का श्राद्ध 12:46 पूर्व	11 सितम्बर गुरु
पञ्चमी का श्राद्ध 12:46 बाद	11 सितम्बर गुरु
षष्टी का श्राद्ध	12 सितम्बर शुक्र
सप्तमी का श्राद्ध	13 सितम्बर शनि
श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी	14 सितम्बर रवि
अष्टमी का श्राद्ध	14 सितम्बर रवि
सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्	15 सितम्बर सोम
नवमी का श्राद्ध	15 सितम्बर सोम
आश्विन संक्रान्ति, दशमी का श्राद्ध	16 सितम्बर मंगल
इन्द्रा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध	17 सितम्बर बुध
सन्यासीनांश्राद्धम्, द्वादशी का श्राद्ध	18 सितम्बर गुरु
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत	19 सितम्बर शुक्र
त्रयोदशी का श्राद्ध	19 सितम्बर शुक्र
शस्त्रादिनां हतानांश्राद्धम्	20 सितम्बर शनि
चतुर्दशी का श्राद्ध	20 सितम्बर शनि
सर्वपितृश्राद्ध, देवपितृकार्येऽमावस	21 सितम्बर रवि
श्राद्ध समाप्त	21 सितम्बर रवि
सूर्य ग्रहण (भारत में अदृश्य)	21 सितम्बर रवि
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा	22 सितम्बर सोम
शारद नवरात्र प्रारम्भ	22 सितम्बर सोम
घट स्थापनम्, अग्रसेन जयन्ती	22 सितम्बर सोम
भा. आश्विन प्रारम्भ	23 सितम्बर मंगल
उपांगललिता व्रत	26 सितम्बर शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी	30 सितम्बर मंगल

अक्तूबर

श्रीदुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त	1 अक्तूबर बुध
विजय दशमी	2 अक्तूबर गुरु
श्रीगान्धी जयंती, श्रीलालबहादुर जयन्ती	2 अक्तूबर गुरु
पापांकुशा एकादशी व्रत	3 अक्तूबर शुक्र
पञ्चक शुरू 21:27	3 अक्तूबर शुक्र
शनि प्रदोष व्रत	4 अक्तूबर शनि
शरद् पूर्णिमा, श्रीसत्यपरायण व्रत	6 अक्तूबर सोम
पूर्णिमा व्रत, श्रीवाल्मीकि जयन्ती	7 अक्तूबर मंगल
पञ्चक समाप्त 25:28	7 अक्तूबर मंगल
श्रीगुरु रामदास जी जयन्ती	8 अक्तूबर बुध
करक चतुर्थी (करवाचौथ)	10 अक्तूबर शुक्र
चन्द्रोदय 20:32	10 अक्तूबर शुक्र
अहोई अष्टमी	13 अक्तूबर सोम
कार्तिक संक्रान्ति, रमा एकादशी व्रत	17 अक्तूबर शुक्र
गोवत्स द्वादशी	17 अक्तूबर शुक्र
शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस	18 अक्तूबर शनि
धन्वन्तरी जयन्ती	18 अक्तूबर शनि
श्रीहनुमान जयन्ती (उ.भा.)	19 अक्तूबर रवि
मासिक शिवरात्रि व्रत	19 अक्तूबर रवि
रूप (नरक) चतुर्दशी	20 अक्तूबर सोम
महालक्ष्मी, कुबेर पूजा	20 अक्तूबर सोम
दीपावली, देवपितृकार्येऽमावस	21 अक्तूबर मंगल
श्री महावीर निर्वाण (जैन)	21 अक्तूबर मंगल
श्रीगोवर्धन पूजा, अन्नकूट	22 अक्तूबर बुध
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा	22 अक्तूबर बुध
भाई दूज (टिक्का), विश्वकर्मा पूजा	23 अक्तूबर गुरु
सौभाग्य पञ्चमी, ज्ञानपञ्चमी (जैन)	26 अक्तूबर रवि
सूर्यषष्ठी पर्व (छठ) बिहार	28 अक्तूबर मंगल
गोपाष्टमी	30 अक्तूबर गुरु
पञ्चक शुरू 6:47	31 अक्तूबर शुक्र

नवम्बर

हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	1 नवम्बर शनि
हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	2 नवम्बर रवि
देवोत्थापनं, तुलसी विवाह	2 नवम्बर रवि
चतुमास्य व्रत समाप्त	2 नवम्बर रवि
भीष्म पञ्चक शुरू	2 नवम्बर रवि
सोम प्रदोष व्रत	3 नवम्बर सोम
पञ्चक समाप्त, वैकुण्ठ चतुर्दशी	4 नवम्बर मंगल
पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत	5 नवम्बर बुध
श्रीगुरु नानक देव जयन्ती	5 नवम्बर बुध
भीष्म पञ्चक समाप्त	5 नवम्बर बुध
कार्तिक स्नान पूर्तिः	5 नवम्बर बुध
मार्गशीर्ष कृष्णप्रतिपदा	6 नवम्बर गुरु
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	8 नवम्बर शनि
चंद्रोदय 20:12 जम्मू	8 नवम्बर शनि
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	8 नवम्बर शनि
श्रीभैरवाष्टमी	12 नवम्बर बुध
श्री नेहरू जयन्ती	14 नवम्बर शुक्र
उत्पन्ना एकादशी व्रत	15 नवम्बर शनि
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	16 नवम्बर रवि
सोम प्रदोष व्रत	17 नवम्बर सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	18 नवम्बर मंगल
देवपितृकार्येऽमावस	20 नवम्बर गुरु
मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा	21 नवम्बर शुक्र
भा. मार्गशीर्ष प्रतिपदा	22 नवम्बर शनि
नागपञ्चमी	25 नवम्बर मंगल
स्कन्दषष्ठी	26 नवम्बर बुध
पञ्चक प्रारम्भ 14:06	27 नवम्बर गुरु

दिसम्बर

श्रीगीता जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत	1 दिसम्बर सोम
पञ्चक समाप्त 23:18	1 दिसम्बर सोम

भौम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी	2 दिसम्बर मंगल
पिशाचमोचन श्राद्धम्	3 दिसम्बर बुध
पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत	4 दिसम्बर गुरु
श्रीदत्तात्रय जयन्ती	4 दिसम्बर गुरु
पौष कृष्ण प्रतिपदा	5 दिसम्बर शुक्र
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत चंद्रोदय 20:03	7 दिसम्बर रवि
जन्म श्री पार्श्वनाथ (जैन)	14 दिसम्बर रवि
पौष संक्रांति, सफला एकादशी व्रत	15 दिसम्बर सोम
प्रदोष व्रत	17 दिसम्बर बुध
मासिक शिवरात्रि व्रत	18 दिसम्बर गुरु
देवपितृकार्येऽमावस	19 दिसम्बर शुक्र
पौष शुक्ल प्रतिपदा	20 दिसम्बर शनि
भा. पौष प्रारम्भ	22 दिसम्बर सोम
पञ्चक प्रारम्भ 19:45	24 दिसम्बर बुध
श्री गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती	27 दिसम्बर शनि
पञ्चक समाप्त 7:41	29 दिसम्बर सोम
पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त)	30 दिसम्बर मंगल
पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)	31 दिसम्बर बुध

जनवरी सन् 2026 ई.

प्रदोष व्रत	1 जनवरी गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत	2 जनवरी शुक्र
पूर्णिमा व्रत, माघस्नानारम्भः	3 जनवरी शनि
माघ कृष्ण प्रतिपदा	4 जनवरी रवि
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	6 जनवरी मंगल
भुग्गा व्रत, चन्द्रोदय 21:00	6 जनवरी मंगल
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	10 जनवरी शनि
पुण्यतिथि पं. रामेश्वर दत्त रैणा राजज्योतिषी, अखनूर	13 जनवरी मंगल
माघ संक्रान्ति, मकर संक्रांति पर्व	14 जनवरी बुध
षट्तिला एकादशी व्रत	14 जनवरी बुध
तिल द्वादशी	15 जनवरी गुरु
प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि व्रत	16 जनवरी शुक्र
मेरू त्रयोदशी (जैन)	16 जनवरी शुक्र
देवपितृकार्येऽमावस, मौनी अमावस	18 जनवरी रवि
माघ शुक्ल प्रतिपदा, श्रीवल्लभ जयंती	19 जनवरी सोम
पञ्चक प्रारम्भ 25:34	20 जनवरी मंगल
श्री गौरी तृतीया, भा.माघारम्भः	21 जनवरी बुध
वरद् चतुर्थी, तिल चतुर्थी	22 जनवरी गुरु
वसन्त पञ्चमी, नेताजी जयन्ती	23 जनवरी शुक्र
पञ्चक समाप्त 13:36, पुत्र सप्तमी	25 जनवरी रवि
विजया सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन)	25 जनवरी रवि
श्रीभीष्माष्टमी, गणराज्य दिवस	26 जनवरी सोम
जया एकादशी व्रत, श्री भीष्म द्वादशी	29 जनवरी गुरु
प्रदोष व्रत	30 जनवरी शुक्र
श्री गुरुहरराय जयन्ती	31 जनवरी शनि

फरवरी

श्रीगुरुरविदास जयन्ती, पूर्णिमा व्रत	1 फरवरी रवि
श्रीसत्यनारायण व्रत	1 फरवरी रवि
फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा	2 फरवरी सोम
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चंद्रोदाय 21:44 जम्मू	5 फरवरी गुरु
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी गुरु
विजया एकादशी व्रत	13 फरवरी शुक्र
शनि प्रदोष व्रत	14 फरवरी शनि
महाशिवरात्रि व्रत	15 फरवरी रवि
पञ्चक प्रारम्भ 9:05, देवपितृकार्येऽमावस	17 फरवरी मंगल
सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)	17 फरवरी मंगल
फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	18 फरवरी बुध
श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती	19 फरवरी गुरु
भा. फाल्गुन प्रारम्भ	20 फरवरी शुक्र
पञ्चक समाप्त 19:07	21 फरवरी शनि
ऋषि याज्ञवल्क्य जयंती	22 फरवरी रवि
होलाष्टक प्रारम्भ	24 फरवरी मंगल
आमलकी एकादशी	27 फरवरी शुक्र

मार्च

प्रदोष व्रत	1 मार्च रवि
होलिका दहन, श्रीसत्यनारायण व्रत	2 मार्च सोम
पूर्णिमा व्रत, चन्द्रग्रहण (भारत में अदृश्य)	3 मार्च मंगल
चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	4 मार्च बुध
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 21:25 जम्मू	6 मार्च शुक्र
शीतला पूजनम्	10 मार्च मंगल
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि
पापमोचिनी एकादशी व्रत	15 मार्च रवि
सोम प्रदोष व्रत, पञ्चक प्रारंभ 18:13	16 मार्च सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	17 मार्च मंगल
पितृकार्येऽमावस	18 मार्च बुध
देवकार्येऽमावस, नवरात्र प्रारम्भ	19 मार्च गुरु
घटस्थापनम्, विक्रमी संवत् 2082 सम्पूर्णम	19 मार्च गुरु

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

सन् 2025 ई.

वैशाख	16 अप्रैल	चन्द्रोदय 22:09
ज्येष्ठ	16 मई	चन्द्रोदय 22:43
आषाढ़	14 जून	चन्द्रोदय 22:12
श्रावण	14 जुलाई	चन्द्रोदय 22:04
भाद्रपद	12 अगस्त	चन्द्रोदय 21:13
आश्विन	10 सितम्बर	चन्द्रोदय 20:24
कार्तिक (करवाचौथ)	10 अक्तूबर	चन्द्रोदय 20:32
मार्गशीर्ष	8 नवम्बर	चन्द्रोदय 20:12
पौष	7 दिसम्बर	चन्द्रोदय 20:03

सन् 2026 ई.

माघ	6 जनवरी	चन्द्रोदय 21:00
फाल्गुन	5 फरवरी	चन्द्रोदय 21:44
चैत्र	6 मार्च	चन्द्रोदय 21:25

गण्डमूल

सन् 2025 ई.

आरम्भ काल (भा.स्टै. समय)	समाप्ति काल (भा.स्टै. समय)
2025 घ.मि.	2025 घ.मि.
29 मार्च 19:26	31 मार्च 13:45
8 अप्रैल 06:25	9 अप्रैल 9:57
16 अप्रैल 29:55	19 अप्रैल 10:21
26 अप्रैल 6:27	27 अप्रैल 24:39
4 मई 12:53	6 मई 15:52
14 मई 11:47	16 मई 16:08
23 मई 16:02	25 मई 11:12
31 मई 21:07	2 जून 22:56
10 जून 18:02	12 जून 21:57
19 जून 23:17	21 जून 19:50
28 जून 6:36	30 जून 7:21
7 जुलाई 25:12	9 जुलाई 28:50
16 जुलाई 28:52	18 जुलाई 26:14
25 जुलाई 16:01	27 जुलाई 16:23
4 अगस्त 9:13	6 अगस्त 13:00
13 अगस्त 10:32	15 अगस्त 7:36
21 अगस्त 24:09	23 अगस्त 24:55
31 अगस्त 17:27	2 सितम्बर 21:51
9 सितम्बर 18:07	11 सितम्बर 13:58
18 सितम्बर 6:32	20 सितम्बर 8:06
27 सितम्बर 25:08	29 सितम्बर 30:18
6 अक्तूबर 28:02	8 अक्तूबर 22:45
15 अक्तूबर 12:00	17 अक्तूबर 12:58
25 अक्तूबर 7:52	27 अक्तूबर 12:28
3 नवम्बर 15:06	5 नवम्बर 9:40
11 नवम्बर 18:18	13 नवम्बर 19:38
21 नवम्बर 13:56	23 नवम्बर 19:28
30 नवम्बर 25:11	2 दिसम्बर 20:52
8 दिसम्बर 26:53	10 दिसम्बर 26:44
18 दिसम्बर 20:07	20 दिसम्बर 25:22
28 दिसम्बर 8:43	29 दिसम्बर 30:05

सन् 2026 ई.

5 जनवरी 13:25	7 जनवरी 11:56
14 जवनरी 27:04	17 जनवरी 8:12
24 जनवरी 14:16	26 जनवरी 12:33
1 फरवरी 23:58	3 फरवरी 22:11
11 फरवरी 10:53	13 फरवरी 16:13
20 फरवरी 20:07	22 फरवरी 17:55
1 मार्च 8:34	3 मार्च 7:32
10 मार्च 19:05	12 मार्च 24:44
19 मार्च 28:05	

गण्डमूल विचार

अश्विनी चार चरण फलोदश

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	पिता को अशुभ	पिता को कष्ट
2.	धन/ऐश्वर्य वृद्धि	धनधान्य लाभ
3.	मन्त्री तुल्य	राजकाज में प्रतिष्ठा
4.	राज्य सम्मान	मान सम्मन

आश्लेषाचारचरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	शान्ति से शुभ	सुख समृद्धि
2.	धन/ऐश्वर्य नाश	सास को कष्ट
3.	माता को कष्ट	सास को कष्ट
4.	पिता को कष्ट	ससुर को कष्ट

मघाचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	माता को कष्ट	माता को कष्ट
2.	पिता को कष्ट	पिता को कष्ट
3.	सुख वृद्धि	धन समृद्धि
4.	धनधान्य प्राप्ति	धनधान्य प्राप्ति

ज्येष्ठाचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	बेड़े भाई को कष्ट	जेठ को कष्ट
2.	छोटा भाई को कष्ट	छोटी बहिन/देवर को कष्ट
3.	माता को कष्ट	माता/सास को कष्टप्रद
4.	स्वयं को कष्टप्रद	देवर को श्रेष्ठ, स्वयं कष्ट

मूलचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	पिता को कष्ट	श्वसुर को नेष्ट
2.	माता को कष्ट	सास को कष्ट
3.	धन हानि	परिवार में दोष
4.	शान्ति से सुख	शान्ति से सुख

रेवतीचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	राजकार्य प्रतिष्ठा	राजकार्य प्रतिष्ठा
2.	मन्त्रीतुल्य	मन्त्रीतुल्य
3.	धन वृद्धि	धन/ऐश्वर्य वृद्धि
4.	स्वयं को कष्ट	स्वयं को कष्ट

एकादशी व्रत

सन् 2025 ई.

चैत्र शुक्ल पक्ष	8 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष	24 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	8 मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	23 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	6 जून (स्मार्त)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	7 जून (वैष्णव)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	21 जून (स्मार्त)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	22 जून (वैष्णव)
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	6 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	21 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	5 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	19 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	3 सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	17 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	3 अक्तूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	17 अक्तूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1 नवम्बर (स्मार्त)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	2 नवम्बर (वैष्णव)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	15 नवम्बर
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	15 दिसम्बर
पौष शुक्ल पक्ष	30 दिसम्बर (स्मार्त)
पौष शुक्ल पक्ष	31 दिसम्बर (वैष्णव)

सन् 2026 ई.

माघ कृष्ण पक्ष	14 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	29 जनवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	13 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	27 फरवरी
चैत्र कृष्ण पक्ष	15 मार्च

पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत

	पूर्णिमा व्रत	श्रीसत्यनारायण व्रत
चैत्र	12 अप्रैल	12 अप्रैल
वैशाख	12 मई	12 मई
ज्येष्ठ	11 जून	10 जून
आषाढ़ (गुरु पूर्णिमा)	10 जुलाई	10 जुलाई
श्रावण (रक्षाबन्धन)	9 अगस्त	8 अगस्त
भाद्रपद	7 सितम्बर	7 सितम्बर
आश्विन (शरत् पूर्णिमा)	6 अक्तूबर	6 अक्तूबर
आश्विन	7 अक्तूबर	
कार्तिक	5 नवम्बर	5 नवम्बर
मार्गशीर्ष	4 दिसम्बर	4 दिसम्बर
	सन् 2026 ई.	
पौष	3 जनवरी	2 जनवरी
माघ	1 फरवरी	1 फरवरी
फाल्गुन	3 मार्च	2 मार्च

अमावस्याएं

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

सन् 2025 ई.

वैशाखा अमावस	27 अप्रैल
ज्येष्ठ अमावस	26 मई (पितृकार्येऽमावस)
	27 मई (देवकार्येऽमावस)
आषाढ़ अमावस	25 जून
श्रावण अमावस	24 जुलाई (हरियाली अमावस)
भाद्रपद अमावस	22 अगस्त (कुशांग्रहणी, पितृकार्येऽमावस)
	23 अगस्त देवकार्येऽमावस, शनैश्चरी अमावस
आश्विन अमावस	21 सितम्बर (देविपितृकार्येऽमावस) सर्वपितृश्राद्ध
कार्तिक अमावस	21 अक्तूबर (देवपितृकार्येऽमावस दीपावली)
मार्गशीर्ष अमावस	20 नवम्बर (देवपितृकार्येऽमावस)
पौष अमावस	19 दिसम्बर (देवपितृकार्येऽमावस कुहू:)

सन् 2026 ई.

माघ अमावस	18 जनवरी (देवपितृकार्येऽमावस)
फाल्गुन अमावस	17 फरवरी (देवपितृकार्येऽमावस)
चैत्र अमावस	18 मार्च (पितृकार्येऽमावस)
	19 मार्च (देवकार्येऽमावस)

(**नोट :-** मध्याह्न काल व्यापिनी अमावस्या पितृकार्य तथा सूर्योदय व्यापिनी देवकार्य में ग्राह्य होती है।)

प्रदोष व्रत

सन् 2025 ई.

चैत्र शुक्ल पक्ष	10 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष	25 अप्रैल
वैशाख शुक्ल पक्ष	9 मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	24 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	8 जून
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	23 जून
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	8 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	22 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	6 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	20 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	5 सितम्बर

आश्विन कृष्ण पक्ष	19 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	4 अक्तूबर
कार्तिक कृष्ण पक्ष	18 अक्तूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	3 नवम्बर
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	17 नवम्बर
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	2 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	17 दिसम्बर

सन् 2026 ई.

पौष शुक्ल पक्ष	1 जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	16 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	30 जनवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	14 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	16 मार्च

पितृ पक्ष में श्राद्ध

पितृ श्राद्ध का मुख्य काल अपराह्न काल होता है। अपराह्नकाल किसे कहते हैं? दिन में पाँच प्रकार का काल होता है इनके समय का मान इस प्रकार से होता है। दिनमान में (या सूर्यास्त में सूर्योदय घटाकर) पाँच का भाग देकर सूर्योदय में पहला भाग जोड़ने से प्रात:काल का समय होता है इसमें द्वितीय भाग जोड़ने से संगव काल का समय होता है इसमें तीसरा भाग जोड़ने से मध्याह्न से सन्ध्याकाल का समय होता है। चौथा भाग जोड़ने से **अपराह्न काल** का समय होता है, पाँचों भाग जोड़ने से सन्ध्यकाल का समय होता है। मुख्य काल **अपराह्न काल** श्राद्ध में ग्राह्य होता है, मुख्यकाल प्राप्त हो तो गौणकाल क्यों? भ्रान्तियों से बचना चाहिए। –सम्पादक

आयु वृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, सुख शान्ति वृद्धि के लिए श्रद्धा एवं सद्भावना से पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध करना सर्वदा शुभफलदायक होता है। सन् 2025 ई॰ में श्राद्ध तिथियाँ निम्न प्रकार से हैं :–

पूर्णिमा का श्राद्ध	7 सितम्बर रविवार
प्रतिपदा का श्राद्ध	8 सितम्बर सोमवार
द्वितीया का श्राद्ध	9 सितम्बर मंगलवार
तृतीया का श्राद्ध	10 सितम्बर बुधवार
चतुर्थी का श्राद्ध	11 सितम्बर गुरुवार 12:46 पूर्व
पञ्चमी का श्राद्ध	11 सितम्बर गुरुवार 12:46 बाद
षष्ठी का श्राद्ध	12 सितम्बर शुक्रवार 9:59 बाद
सप्तमी का श्राद्ध	13 सितम्बर शनिववार प्रात: 7:24 बाद
अष्टमी का श्राद्ध	14 सितम्बर रविवार
नवमी का श्राद्ध	15 सितम्बर सोमवार
दशमी का श्राद्ध	16 सितम्बर मंगलवार
एकादशी का श्राद्ध	17 सितम्बर बुधवार
द्वादशी का श्राद्ध	18 सितम्बर गुरुवार
त्रयोदशी का श्राद्ध	19 सितम्बर शुक्रवार
चतुर्दशी का श्राद्ध	20 सितम्बर शनिवार
सर्वपितृ श्राद्ध	21 सितम्बर रविवार

नोट– सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध नवमी तिथि को ही करना चाहिए और चतुर्दशी को केवल शस्त्र, विष, अग्नि, दुर्घटनाओं आदि में जिनकी मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध करना चाहिए। चतुर्दशी तिथि को जिनकी सामान्य मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध अमावस्या के दिन करने का भी विधान है।

महापुरुषों के जन्मदिन

सन् 2025 ई.

शहीदी भगत सिंह	23 मार्च
श्री महावीर जयंती (जैन)	10 अप्रैल
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रैल
श्री वल्लभाचार्य जयंती	24 अप्रैल
श्री छत्रपति शिवाजी जयंती	29 अप्रैल
श्री परशुराम जयंती	29 अप्रैल
आद्य गुरु शंकराचार्य जी	2 मई
स्वामी रामानुजाचार्य	3 मई
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती	7 मई
श्री नारद जयन्ती	14 मई
श्री महाराणा प्रताप	29 मई
कबीर जयन्ती	11 जून
ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह	14 जून
श्री ध्यानू भगत जयंती	24 जून
ऋषि वेदव्यास जयंती	10 जुलाई
लोकमान्य गंगाधर तिलक जयंती	23 जुलाई
सन्त तुलसीदास जयंती	31 जुलाई
सन्त ज्ञानेश्वर	16 अगस्त
भक्त नवल (जोधपुर)	16 अगस्त
श्री दधीचि जयंती	31 अगस्त
श्री चंद्र महाराज	1 सितम्बर
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितम्बर
महाराजा हरि सिंह	21 सितम्बर
महाराजा अग्रसेन जयंती	22 सितम्बर
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तूबर
श्री माधवाचार्य	2 अक्तूबर
श्री धनवन्तरी	19 अक्तूबर

महाराजा गुलाब सिंह	21 अक्तूबर
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तूबर
श्रीगुरु नानक देव जयंती	5 नवम्बर
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवम्बर
श्री जवाहर लाल नेहरू जयंती	14 नवम्बर
लाला लाजपतराय (शहीद)	17 नवम्बर
श्री साई बाबा	23 नवम्बर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसम्बर
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	4 दिसम्बर
शहीद स. उधम सिंह जयंती	26 दिसम्बर

सन् 2026 ई.

स्वामी रामानन्दाचार्य जी	9 जनवरी
स्वामी विवेकान्द जी	12 जनवरी
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	20 जनवरी
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जनवरी
गुरु रविदास जी	1 फरवरी
स्वामी दयानन्द सरस्वती	12 फरवरी
परमहंस रामकृष्ण जी	19 फरवरी
श्री चैतन्य महाप्रभु	3 मार्च
सन्त तुकाराम जी	5 मार्च

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जनवरी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	4 फरवरी
मेला शिवरात्रि (पंजवटी दवलैड़) आर.एस.पुरा	26 फर.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	27-28 मार्च
गुप्तगंगा (अखनूर) समाह कुफ्फी	28 मार्च
नवरात्रे पर्व (कटड़ा)	30 मार्च-6 अप्रैल
सेठ बिरादरी मेला (बाबा कैलखदेव ठठर)	13 अप्रैल
देविका स्नान	13 अप्रैल
बावा कांशीगिरी जयंती, सुंदरबनी	13-14 अप्रैल
मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)	5 अप्रैल
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	11 मई
मेला मानसर	1-2 जून
मेला वैद ब्राह्मण बिरादरी	1-2 जून
मेला क्षीर भवानी (कश्मीर, जानीपुर जम्मू)	3 जून
यात्रा धारलदा ऊधमपुर	5 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	11 जून
मेला वानसुलदेवता (रामबन) चम्बा	21 से 28 जून
मेला चमलियाल	26 जून
माँ सरथल देवी यात्रा प्रारंभ (किश्तवाड़)	3 जुलाई
मेला शारीक भवानी	4 जुलाई
मेला हरिप्रयाग (बनी-बसौली)	6 जुलाई
मेला ज्वालामुखी	9 जुलाई
मेला रुद्रगंगा, सोमेणी देसा (डोडा)	10 जुलाई
श्रावण शिवरात्रि गाँवचलाई	23 जुलाई
(शिवपुरी,राजगढ़,रामबन)	23 जुलाई
मेला नागपंचमी (डोडा)	29 जुलाई
शोपियान यात्रा प्रारम्भ	6 अगस्त
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा (कश्मीर)	9 अगस्त
मेला स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	9 अगस्त
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	15 अगस्त
मेला गोगा नवमी, रैणा बिरादरी मेल	17 अगस्त
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	21-22 अगस्त
मेला पात (भद्रवाह)	28-30 अगस्त
मेला आशापति, मार्त्तण्ड	20-21 सितम्बर
मेल जम्बाल ब्राह्मण बिरादरी, पुरमण्डल जम्मू	2 नवम्बर
मेला झिड़ी बाबा जित्तो (सामाचक्क)	5 नवम्बर
मेला पुरमण्डल	19 नवम्बर
मेला मथवार (बाबा बल्लो जी)	8 दिसम्बर
मेला वानसुल देवता (रामबन) चम्बा	21-28 दिसम्बर

हिमाचल प्रदेश के मेले

सन् 2025 ई.

मेला नलवाढ़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
वालासुन्दरी (सिरमौर)	30 मार्च-6 अप्रैल
मेला नलवाढ़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रैल
मेला नयना देवी (विलासपुर)	12 अप्रैल
ललवाढ़ (सुन्दरनगर)	31 मार्च-5 अप्रैल
मेला लाहौल (मण्डी)	4 अप्रैल
मेला श्रीदुगाष्टमी (कांगड़ा देवी)	5 अप्रैल
मेला रोहरू (महासू)	8-9 अप्रैल
मेला खनानी (कुल्लू)	19-20 अप्रैल
पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रैल
मणिकरण (कुल्लू)	7-12 मई
मेला घाघरस (विलासपुर)	14 मई
मेला पशु (हमीरपुर)शुरू	19 मई
मेला श्यामा काली (सरकाघाट)	20 मई
मेला शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मेला ग्राम पंचग्राई (विलासपुर)	29-30 मई
मेला स्थूल मढोल	1-4 जून
मेला पीपलू (हमीरपुर)	6 जून
मेला नौवाही देवी (सरकाघाट)	15 जून
मेला बाड़ी सोलन	15 जून
मेला भुन्तर (कुल्लू)	15-17 जून
शूलिनी (सोलन)	20-22 जून
मेला टौणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	6 जुलाई
मेला नागिनी (नूरपुर)	16 जुलाई
मेला सिद्ध बावा शिब्बो (ज्वाली)	20 जुलाई
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	25 जुलाई-1 अगस्त

मेला चामुण्डा देवी	25 जुलाई-1 अगस्त
मेला नयना देवी (विलासपुर)	25 जुलाई-1 अगस्त
मेला मिञ्जरां (चम्बा)	27 जुलाई
मेला गुग्गा नवमी (विलासपुर)	17 अगस्त
मेला बन्द्राल (कुल्लू)	17 अगस्त
मेला अम्बिकादेवी (सदर मण्डी)	21 अगस्त
मेला महासू (शिलाई सिरमौर)	27-28 अगस्त
हिमाचल गणेश उत्सव (ऊना)	27-अगस्त-6 सितं.
यात्रा मणिमहेश (चम्बा) शुरू	29 अगस्त
मेला गुग्गामाड़ी (सुबाथू)	31 अगस्त-1 सितंबर
मेला वामन द्वादशी (नाहन)	4 सितम्बर
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितम्बर
मेला नलवाढ़ (चिच्चोट)	16-23 सितम्बर
मेला चामुण्डा देवी (कांगड़ा)	22 सितंबर-1 अक्तूबर
मेला बगलामुखी (वनखण्डी)	22 सितंबर-1 अक्तूबर
मेला रामलीला	22 सितंबर-2 अक्तूबर
मेला शीतला माता (कांगड़ा)	30 सितम्बर
मेला ज्वालामुखी	30 सितम्बर-1अक्तूबर
मेला तारादेवी (शिमला)	30 सितंबर-2 अक्तूबर
मेला दशहरा (अर्की)	2 अक्तूबर
मेला दशहरा (कुल्लू)	2-7 अक्तूबर
मेला कालीवाड़ी (शिमला)	20-21 अक्तूबर
मेला बाबा रूद्रीनन्दनारी (ऊना)	1-5 नवम्बर
मेला रेणुका (सिरमौर)	1-2 नवम्बर
मेला जोगी पांगा (ऊना)	5 नवम्बर
बुढ़ी दीपावली (सिरमौर)	20-30 नवम्बर

सन् 2026 ई.

मेला ब्रह्मा (कुल्लू)	20 जनवरी
मेला वसन्तपंचमी (विलासपुर)	23 जनवरी
मेला काठगढ़ (कांगड़ा)	15 फरवरी
मेला वैजनाथ (कांगड़ा)	15-17 फरवरी
मेला स्वर्ग आश्रम (नूरपुर)	16 फरवरी
महाशिवरात्रि मेला (मण्डी)	15-23 फरवरी
मेला बड़भागसिंह (ऊना)	24 फरवरी-3 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	3-7 मार्च
मेला बावा बालकनाथ (प्रारम्भ)	14 मार्च
मेला नलवाढ़ (विलासपुर)	17-22 मार्च

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

सन् 2025 ई.

ओली तप प्रारम्भ	4 अप्रैल
महावीर जयंती	10 अप्रैल
ओली तप समाप्त	12 अप्रैल
वरसी तप समाप्त	30 अप्रैल
केवलज्ञान दिवस	7 मई
मेला चक्रेशवरी देवी (सरहिन्द)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रारंभ	10 जुलाई
तेरापंथ स्थापनादिवस	10 जुलाई
जैन महोत्सव	22-24 जुलाई
पयुर्षण पर्व प्रारंभ	20 अगस्त
संवत्सरी महापर्व	27 अगस्त
श्रीकालू निर्वाण दिवस	29 अगस्त
श्रीतुलसीपट्टारोहण	1 सितम्बर
श्री महावीर निर्वाण दिवस	5 सितम्बर
श्रीवीर संवत् 2552 प्रारंभ	22 अक्तूबर
आचार्य श्री तुलसी जयन्ती	23 अक्तूबर
ज्ञान पञ्चमी	26 अक्तूबर
चतुर्मास्य व्रत समाप्त	5 नवम्बर
श्री महावीर दीक्षा दिवस	14 नवम्बर
मौनी एकादशी	1 दिसम्बर
आचार्य तुलसी दीक्षा दिवस	9 दिसम्बर
श्री पार्श्वनाथ जयंती	14 दिसम्बर

सन् 2026 ई.

मेरू त्र्योदशी जैन	16 जनवरी
मर्यादा महोत्सव जैन	25 जनवरी
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	1-3 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	10 मार्च
वरसी तप प्रारम्भ	11 मार्च

दशमहाविद्या जयन्ती

सन् 2025 ई.

श्री महातारा जयंती	5 अप्रैल
श्री मातङ्गी जयंती	30 अप्रैल
श्री बगुलामुखी जयंती	5 मई
श्री छिन्नमस्तिका जयंती	11 मई
श्री धूमावती जयंती	3 जून
श्री महाकाली जयंती	15 अगस्त
श्री भुवनेश्वरी जयंती	4 सितम्बर
श्री कमला जयंती	9 अक्तूबर
श्री त्रिपुरभैरवी जयंती	4 दिसम्बर

सन् 2026 ई.

श्री ललिता जयंती	1 फरवरी

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

सन् 2025 ई.

श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	4 फरवरी
होलिका दहन	13 मार्च
श्रीभगवत् नारायण जयंती	18 मार्च
श्री रामनवमी पर्व	6 अप्रैल
वैशाखी पर्व	13 अप्रैल
जानकी जयंती	5 मई
गंगा दशहरा	5 जून

गुरु पूर्णिमा	10 जुलाई
तुलसी जयंती पर्व	31 जुलाई
श्रीकृष्ण जयंती पर्व, नन्दोत्सव	15-18 अगस्त
महंत गुरु गोविंददास जयंती	27 अक्तूबर

दशावतार जयंतियाँ

सन् 2025 ई.

श्री मत्स्यावतार जयंती	31 मार्च
श्री रामावतार जयंती	6 अप्रैल
श्री परशुराम जयंती	29 अप्रैल
श्री नृसिंहावतार जयंती	11 मई
श्री कूर्मावतार जयंती	12 मई
श्री बुद्धावतार जयंती	12 मई
श्री कल्कि अवतार जयंती	30 जुलाई
श्री कृष्णावतार जयंती	15 अगस्त
श्री वाराहावतार जयंती	25 अगस्त
श्री वामनावतार जयंती	4 सितम्बर

श्रीकुलदेव बावा कैलख देव जी

ठठ्र रायपुर, जम्मू के स्थायी कार्यक्रम

मेल सेठ ब्राह्मण बिरादरी
(13 अप्रैल 2025)
मेल फबा महाजन बिरादरी - बुद्धपूर्णिमा
(12 मई 2025)
मुण्डल मुहूर्त सेठ बिरादरी
वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
(26 अप्रैल 2025)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
(19 नवम्बर 2025)

मुस्लिम त्यौहार

सन् 2025 ई.

उर्स ख़्वाजा मोईन्-उद्-दीन चिश्ती अजमेर	2-7 जन.
जन्म श्री हजरत अली	14 जनवरी
शबे-मिराज	28 जनवरी
शब-ए-बरात	14 फरवरी
रोजे शुरू	2 मार्च
शहादत-ए-हजरत अली	22 मार्च
जमातुलविदा	28 मार्च
शबे-कदर	28 मार्च
ईद-उल-फितर (मीठी)	31 मार्च
ईदुलजुहा (बकरीद)	7 जून
मुहर्रम हिज़री 1447 प्रारंभ	27 जून
मुहर्रम (ताजिया)	6 जुलाई
चेहलुम	14 अगस्त
आखरी चहार, शम्बा	20 अगस्त
शहादते-इमामहसन	23 अगस्त
ईदे-मिलाद	5 सितम्बर
ईदे-मौलाद	10 सितम्बर
ग्यारहवीं शरीफ	4 अक्तूबर
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	22-27 दिसम्बर

सन् 2026 ई.

जन्म श्रीहज़रत अली	3 जनवरी
शबे-मिराज	17 जनवरी
शब-ए-बरात	4 फरवरी
रमजान (रोजे शुरू)	19 फरवरी
शहादत-ए-हजरत अली	11 मार्च
जमातुलविदा	20 मार्च
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	21 मार्च

क्रिश्चियन त्यौहार

सन् 2025 ई.

New Year	1 January
Epiphany	6 January
Septuagesima, Sunday	16 Feburary
Quinquagesima, Sunday	2 March
Ash Wednesday	5 March
Palm Sunday	13 April
Good Friday	18 April
Easter Sunday	20 April
Low Sunday	27 April
Rogation Sunday	25 May
Holy Thursday (Ascension Day)	29 May
Whit Sunday	8 June
Trinity Sunday	15 June
Corpus Cristi (Thursday)	19 June
First Sunday (In Advent)	30 November
Christmas Day	25 December

शुभकार्यों में विवर्जित काल
राहुकाल

रविवार	:	सायं 4:30 से 6:00 तक
सोमवार	:	प्रात: 7:30 से 9:00 तक
मंगलवार	:	दोपहर 3:00 से 4:30 तक
बुधवार	:	दोपहर 12:00 से 1:30 तक
वृहस्पतिवार	:	दोपहर 1:30 से 3:00 तक
शुक्रवार	:	दिवा 10:30 से दो. 12:00 तक
शनि	:	प्रात: 9:00 से 10:30 तक

पञ्चक आरम्भ तथा समाप्ति काल
विक्रमी संवत् 2082 (सन् 2025 - 2026 ई. तक)

आरम्भ काल (भा.स्टै. समय)	समाप्ति काल (भा.स्टै. समय)
सन् 2025 ई. घ.मि.	**सन् 2025 ई. घ.मि.**
–	30 मार्च 16:35
22 अप्रैल 24:30	26 अप्रैल 27:39
20 मई 7:36	24 मई 13:48
16 जून 13:09	20 जून 21:45
13 जुलाई 18:52	17 जुलाई 27:39
9 अगस्त 26:10	14 अगस्त 9:06
6 सितम्बर 11:20	10 सितम्बर 16:03
3 अक्तूबर 21:27	7 अक्तूबर 25:28
31 अक्तूबर 6:47	4 नवम्बर 12:25
27 नवम्बर 14:06	1 दिसम्बर 23:18
24 दिसम्बर 19:45	29 दिसम्बर 7:41
सन् 2026 ई.	**सन् 2026 ई.**
20 जनवरी 25:34	25 जनवरी 13:36
17 फरवरी 9:05	21 फरवरी 19:07
16 मार्च 18:13	

पञ्चक विचार

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्रान्त तक पञ्चक होते हैं। शास्त्र दृष्टि से पञ्चकों में लकड़ी काटना; लकड़ी खरीदना; दक्षिण दिशा की यात्रा; प्रेत दाह संस्कार; धातु संचय करना; दुकान-मकान का छत डालना; चटाई, चारपाई, सोफा, आदि का बनाना शुभ नहीं होता। पञ्चकों में यदि यह कार्य किए जाएँ तो उसमें पाँच गुणा हानि होती है। **ध्यान रहे–** विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधु प्रवेश, रक्षाबन्धन, भैया दूज, आदि पर्वों में शास्त्रकारों ने कहीं भी निषेध नहीं किया है। व्यर्थ में पञ्चकों के विषय में भ्रमित नहीं रहना चाहिए।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल – सन् 2025-26 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रैल	अर्द्धरात्रौपरि 3:20	रात्रि 8:33 से चन्द्रे 8:33 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई	रात्रि 12:11	सायं 5:03 से रात्रि 11:27 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून	प्रात: प्रात: 6:43	प्रात: 6:07 से 12:31 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई	सायं 5:30	भौमे 29:04 से बुधे 17:04 तक
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अगस्त	अर्द्धरात्रौपरि 1:45	19:10 से 25:34 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितम्बर	अर्द्धरात्रौपरि 1:45	25:34 से बुधे 7:59 तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तूबर	दिवा 1:45	7:33 से 19:33 तक
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	16 नवम्बर	दिवा 1:36	प्रात: 6:55 से 13:36 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसम्बर	अर्द्धरात्रौपरि 4:17	प्रात: 4:17 से भौमे 10:18 तक
माघ संक्रान्ति	14 जनवरी 2026	दिवा 3:06	दिवा 3:06 से अ.रात्रौपरि 6:34 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी	अर्द्धरात्रौपरि 4:06	रात्रि 21:03 से प्रात: 4:06 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च	अर्द्धरात्रौपरि 1:01	25:01 से रविवार 30:39 तक

गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान संवत् 2082 (सन् 2025-2026 ई.)

सद्गुरु साहिबान के नाम	जन्म दिन	
(1) गुरु नानक देव जी	5 नवम्बर	कार्त्तिक पूर्णिमा
(2) गुरु अंगद देव जी	28 अप्रैल	वैशाख शु. प्रतिपदा
(3) गुरु अमरदास जी	11 मई	वैशाख शु. चतुर्दशी
(4) गुरु रामदास जी	8 अक्तूबर	कार्तिक कृ. द्वितीया
(5) गुरु अर्जुन देव जी	20 अप्रैल	वैशाख कृ. षष्ठी
(6) गुरु हरगोविन्द जी	12 जून	ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा
(7) गुरु हरिराय जी	31 जनवरी 2026 ई.	माघ शु. त्रयोदशी
(8) गुरु हरकिशन जी	19 जुलाई 2025 ई.	श्रावण कृ. नवमी
(9) गुरु तेग बहादुर जी	18 अप्रैल	वैशाख कृ. पञ्चमी
(10) गुरु गोविन्द सिंह जी	27 दिसम्बर 2026	पौष शु. सप्तमी

श्री कुलदेव रैणा विरादरी
सूञ्जवां जम्मू के स्थायी कार्यक्रम

देवमूर्तियों का स्थापना दिवस
(रविवार, 27 अप्रैल 2025)

गुग्गा नवमी - मेल रैणा विरादरी, सूञ्जवां जम्मू
(रविवार, 17 अगस्त 2025)

कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा - मेल रैणा विरादरी, सूञ्जवां, जम्मू
(बुधवार, 5 नवम्बर 2025)

मल्ल माता स्थापना दिवस
(सोमवार, 19 जनवरी, 2025)

शेयर बाजार फल वर्ष सन् 2025-26 ई.

श्री प्रवीन कुमार जैन - जीवन परिचय

प्रवीन कुमार जैन

जातक तत्व के तृतीय विवेक के श्लोक 66 में महादेव पाठक ने बताया है कि यदि 'दशमेश का नवांशेश बुध हो तो जातक साहित्यिक गतिविधियों सम्बन्धित लेखक, अनुवादक, एकाउन्टेन्ट, ज्योतिषी, अध्यापक, गणितज्ञ, वकील तथा पुस्तक विक्रेता की वृति अपनाता है।' कन्या लग्न, श्रवण नक्षत्र, मकर राशि में जन्मे सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद श्री प्रवीन कुमार जैन के जीवन पर उक्त योग पूर्णतया घटित होता है। आपको बचपन से साहित्यिक कृतियों से लगाव रहा है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं के अतिरिकत आपने अंग्रेजी भाषा के हस्ताक्षरों को पढ़ा। युवावस्था में मैकेनिकेल इन्जीनियरिंग के अतिरिक्त टैक्स्टाईल इन्जीनियरिंग तथा एम.बी.ए. (वित्त) में उपाधि प्राप्त की। रूचि बढ़ी तो संस्कृत तथा ज्योतिष विषय का विधिवत अध्ययन किया। गत् लगभग 25 वर्षों से आप ज्योतिष जगत में सक्रिय हैं। आप पंचाग कर्ता हैं, ज्योतिष विषयक मूर्धन्य लेखक हैं भूमंड़लीय ज्योतिष में निष्णात हैं। ज्योतिष जगत् की विभिन्न मासिक पत्रिकाओं में आपके हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषाओं में आपके लेख निरन्तर प्रकाशित होते हैं। राष्ट्रीय पंचागों में प्रकाशित व्यापारिक भविष्यवाणियाँ तथा राजनैतिक आकलन आपकी विशेषता है। अब तक आपके लगभग 500 लेख तथा चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'शेयर मार्केट एस्ट्रोलाजी' तथा अन्य दो पुस्तकों पर कार्य प्रगति पर है।

प्रवीन कुमार जैन

हमारा शेयर बाजार का आकलन पूर्व में बहुचर्चित, सर्वत्र प्रशसिंत तथा सराहनीय रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों से दिन प्रतिदिन अनेक पाठकों ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। पूर्व की भांति इस वर्ष 2025-26 के लिये प्रस्तुत शेयर बाजार का आकलन उन्हीं ज्योतिषीय सिंद्वातों, मतों, परम्पराओं तथा ग्रह गोचर पर आधारित है जिन की गणना के आधार पर किया जाता रहा है। गत वर्षो की भांति हम इस आलेख में वर्ष के प्रत्येक मंगलवार के लिये शेयर बाजार का आकलन प्रस्तुत कर रहे है तो उसका कारण जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके है, मात्र इतना है कि अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है। अपने संशोधन तथा शोध के उपरान्त हम भी इस निर्णय पर पहुंचे है कि शेयर बाजार पर मंगल की राशि स्थिति, गोचर, शर तथा क्रांति का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। हमारा प्रयास सदैव शोधात्मक कार्य को प्रस्तुत करना रहा है ताकि वह अनेकानेक प्रकार से विद्वत जनों के लिये न केवल उपयोगी हो वरन् विचारोत्तेजक भी हो तथा विद्धान पाठकों को इस दिशा में और भी अधिक परिष्कृत रूप में कार्य करने के लिये प्रेरित करे। अतः इस वर्ष से हम जिन जिन तारीखों में बाजार की चाल बदलेगी, उन उन तारीखों का उल्लेख कर दे रहे है। निश्चित रूप से यह पाठकों के लिये लाभदायी सिद्ध होगा। ध्यान रहे कि बाजार के आकलन में प्रतिशत में बताई गई तेजी मंदी इन्ट्राडे है, बाजार किसी दिन तेजी में जाने के उपरान्त भी पिछले दिन की तुलना में गिरकर बंद हुआ हो सकता है। ग्रह स्थिति के अनुसार वर्ष का प्रारम्भ इन्वेस्टर्स के लिये उत्साहजनक रहेगा। स्टाक मार्कट का संवेदी सूचकांक नई ऊंचाईयों को छुयेगा। जनवरी मास के प्रारम्भ से 07 अप्रैल 2025 के मध्य इन्वेस्टर्स अच्छा लाभ लेगे। संवेदी सूचंकाक में वृद्धि होगी।

शेयर्स नॉन एक्टिव रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। संवेदी सूचंकाक पॉजिटिव रहेगा। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, आयरन एण्ड हार्डवेयर्स, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, टैक्स्टाईल, शुगर, कापर, लैड़, सीमेंट, कापर, स्टील, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज के शेयर पॉजिटिव रहेंगे।

23 दिस. : 58.31 प्रतिशत एक्टिव शेयर्स में ट्रेडिंग होगी। 25.02 प्रतिशत शेयर्स नॉन एक्टिव रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। संवेदी सूचंकाक निगेटिव रहेगा। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, आयरन एण्ड हार्डवेयर्स, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, टैक्स्टाईल, शुगर, कापर, लैड, सीमेंट, कापर, स्टील, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज के शेयर पॉजिटिव रहेंगे।

30 दिस.: 58.31 प्रतिशत एक्टिव शेयर्स में ट्रेडिंग होगी। 33.02 प्रतिशत शेयर्स नॉन एक्टिव रहेंगे। 08.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। संवेदी सूचंकाक पाजिटिव रहेगा। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, आयरन एण्ड हार्डवेयर्स, मेटल इण्डस्ट्रीज, हैवी मशीनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, टैक्स्टाईल, शुगर, लैड़, सीमेंट, कापर, स्टील, रियल एस्टेट, लेदर इण्डस्ट्रीज के शेयर पॉजिटिव रहेंगे।

शेयर बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है. बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है. बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आकलन कर लेना हितावह है. ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, मुद्रक, प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्घवार्षिक रिर्पोट के लिये लेखक से उनके स्थायी आवास सी-82 वल्लभ नगर, उमा नगर के सामने, नोविनो तरसाली रोड़, वड़ोदरा (गुजरात), पिन - 390009 मो 095 7433 7962 पर अथवा pmummy@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

ग्रहों के आईने में देश की दशा और दिशा वर्ष 2025-26

गत वर्ष दैवज्ञ दृष्टि में किये फलादेश ठीक उसी प्रकार घटित हुए जैसा कि पंचाग के इन्हीं पृष्ठों पर हमने लिखा था। वस्तुत: किसी भी राष्ट्र के राजनैतिक भविष्य तथा वहाँ के निवासियों के जनजीवन पर ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये कूर्म चक्र पर विचार करना अतिआवश्यक है, साथ ही ग्रह गोचर तथा राष्ट्र की जीवन धारा को प्रभावित करने वाले प्रमुख एवं विशिष्ट व्यक्तियों की कुंड़लीयों का अध्ययन भी आवश्यक रहता है। सुप्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिर्विद टोलमी ने विभिन्न राष्ट्रों पर ग्रहों के प्रभाव की व्याख्या करने के लिये सभी देशो की राशि का निर्धारण कर एक महत्वपूर्ण कार्य का सम्पादन किया था। परन्तु इससे भी पूर्व जैनमुनि श्री नरपति आचार्य विश्व, पृथ्वी, राष्ट्र, देश, नगर, ग्राम क्षेत्र तथा गृह पर ग्रहों के प्रभाव को जानने के लिये आगमोक्त कूर्म चक्र का वर्णन अपने ग्रंथ नरपति जयचर्या में लिपिबद्ध कर चुके थे। इस ग्रंथ के अनुसार पृथ्वी कूर्म चक्र के लिये कूर्माकृति बनाकर कूर्म के नौ अंगो में तीन तीन नक्षत्रों की स्थापना की जाती है। पृथ्वी कूर्म चक्र के उत्तर कोण में शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र कुक्षि में स्थित होने पर नेपाल, काश्मीर, गृजंन, खुरासान, माथुर, मलेच्छ देशों, खश, केदार मंडल, हिमाच्छादित प्रदेशों में कष्ट रहता है। महर्षि पराशर ने उत्तर दिशा के अन्य स्थानों यथा - कैलाश पर्वत, हिमवान, वसुमान गिरी, धनुष्मान गिरी, क्रौंच, मेरु, उत्तर कुरु, क्षुद, मीन, कैकय, वसाति, यामुल, भोगप्रस्थ, अर्जुनायन, आगनीध्र (टेहरी गढ़वाल), आदर्श, अर्न्तद्वीप, त्रिगर्त (सतलज, व्यास, रावी के मध्य का भूभाग), तुरगागन (तुर्कमान-रुस), अश्वमुख, केशधर, पिपिट, नासिक, दासरेक, वाटधान, शरधान (हिमालय में), तक्षशिला (वर्तमान में रावलपिडी के पास), पुष्कलावत, कैलावत (हिमालय में), कण्ठधान (जम्मू कश्मीर में), अम्बर, मद्रक, मालव, पौरव, कच्छार, दण्डपिंगलक, माणहल, हूण, कोहल, शीतक, माण्डव्य, भूतपुर, गान्धार, यशेवति, हेमताल, राजन्यखचर, गव्य, यौधेय, दासमेय, यामाकक्षेप, धूर्तदेश का उल्लेख किया है। इन सभी स्थानों की वर्तमान स्थिति जान पाना लगभग दुरुह ही है।

बारह-राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश सन् 2025 ई॰

ज्योतिर्विद् प्रवीनकुमार जैन

जनवरी

मेष राशि : 04 जनवरी : नवम भाव से गोचर कर रहे बुध के मंगल से वेध में अपवाद तथा मिथ्या अपवाद की स्थिति समाप्त होगी। कार्यों के अवरोध दूर होकर सफलता मिलेगी। कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न होंगे। खानपान में सुधार होगा। 14 जनवरी से दशम भाव से सूर्य के गोचर में वरिष्ठों एवं सम्मानीय व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थय उत्तम रहेगा। प्रतिष्ठित कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होंगे। पारिवारिक सुख समृद्धि बढ़ेगी। अन्यों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने तथा प्रभाव डालने की प्रबल इच्छा रहेगी। 21 जनवरी से तृतीय भाव से गोचर कर रहे मंगल के गुरु से वेध में आर्थिक हानि हागी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। विरोध तथा विरोधी बढ़ेंगे। प्रत्येक कार्य में असफलता मिलने से मन में उत्साह का अभाव रहेगा। डिप्रेशन अनुभव करेंगे। किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी। 28 जनवरी प्रात: से व्यय भाव से गोचर कर रहे शुक्र के सूर्य तथा बुध से वेध में कार्यों में सफलता मिलेगी। अक्समात से बचाव होगा। खोई अथवा चौरी गई वस्तु पुन: प्राप्त होगी। उद्योग-व्यवसाय में प्रगति होगी। शुभ दिवस: 07, 14, 16, 18, 21, 23, 26, 28 अशुभ दिवस: 03, 05, 09, 11, 30

वृष राशि : 04 जनवरी से गोचर के बुध के सूर्य से वेध में सन्तान के दायित्वों के प्रति चिंता बनेगी। सन्तान को अथवा सन्तान से कष्ट रहेगा। नवीन प्रोजेक्टस में अवरोध बनेंगे। बुद्धि चातुर्य का यथोचित लाभ नहीं मिलेगा। मन अशांत रहेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। 14 जनवरी से सूर्य का गोचर मिथ्या अपवाद तथा अपमान का कारण बनेगा। प्रतिष्ठा का आभामंड़ल क्षीण होगा। अकारण ही धन तथा पुण्य की हानि होगी। आय में कमी आयेगी। रोगों का प्रकोप होगा। मन अज्ञात कारणों से भय ग्रस्त रहेगा। निराशा तथा खिन्नता बढ़ेगी। प्रियजनों से अलग रहना होगा। 21 जनवरी से मंगल के गोचर में प्राय: ही सभी कार्य में असफलता मिलेगी। वाणी में कठोरता आयेगी। दुष्ट व्यक्तियों का संग साथ प्रिय लगेगा। राजकीय भय होगा। चोरी अथवा अग्निकांड़ से धन सम्पत्ति की हानि होगी। पाचन तंत्र बिगड़ेगा। 28 जनवरी से शुक्र के गुरु से वेध में कार्य व्यवसाय हानि होगी। आर्थिक स्थिति कठिन बनेगी। पद प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। कष्ट निवारण हेतु श्रीसूक्त का नियमित पाठ करें।शुभ दिवस : 05, 07, 11, 18, 23, 26 अशुभ दिवस : 03, 09, 14, 16, 21, 28, 30

मिथुन राशि : 04 जनवरी से गोचर के बुध के गुरु से वेध में विरोध तथा विरोधियों का शमन होगा। सभी प्रकार की सुख सुविधा मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। आय वृद्धि होकर आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पारिवारिक सदस्यों तथा मित्रों के साथ वैचारिक साम्यता रहेगी। मनमुटाव समाप्त होगा। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। शरीर स्वस्थ रहेगा। निर्बलता दूर होगी। 14 जनवरी से सूर्य के गोचर में खांसी आदि कफजन्य बीमारियों, उच्च रक्त चाप अथवा ज्वर से पीड़ित होंगे। स्वयं के किये गये कार्यों का - विशेषकर गलत कार्यों का परिणाम मिलेगा। विरोधियों से विवाद बढ़ेंगे, झगड़ा होगा। शासन-प्रशासन से भय तथा अपमान की स्थिति बनेगी। दाम्पत्य जीवन में बाधा आयेगी। 21 जनवरी से मंगल के गोचर में स्वास्थ्य प्रभावित होगा। उच्च रक्त चाप अथवा ताप से पीड़ित होंगे। पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे। बन्धु बान्धवों से विग्रह विरोध रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में बाधा आयेगी। असामाजिक तत्वों से पीड़ा रहेगी। मन खिन्न रहेगा। 28 जनवरी से गोचर कर रहे शुक्र के मंगल से वेध में मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा समाप्त होगी। शारीरिक निर्बलता दूर होगी। आर्थिक लाभ मिलेगा। विरोध एवं विरोधियों पर नियन्त्रण रखने में सफलता मिलेगी। महिलाओं से सहयोग मिलेगा। शुभ दिवस : 05, 07, 09, 11, 16, 21, 23 अशुभ दिवस : 03, 14, 18, 26, 28, 30

कर्क राशि : 04 जनवरी बुध के गोचर में कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। घर के लिये दैनिक उपभोग की सामग्री के साथ साथ विलासिता की सामग्री क्रय होगी। पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन में रुचि रहेगी। 14 जनवरी से गोचर के सूर्य के चन्द्रमा तथा मंगल से वेध में कार्यों में असफलता रहेगी। थका देने वाली यात्राओं से कष्ट रहेगा। परिवारजनों एवं मित्रों से मतभेद एवं विवाद बना रहेगा। जीवन साथी तथा सन्तान को किसी रोग से पीड़ा होगी। स्वयं भी अपच, उदर विकार तथा कब्ज आदि से पीड़ित होंगे। 21 जनवरी से मंगल के गोचर में व्यय अधिक होगा। किसी कारणवश घर से दूर रहना होगा। नेत्र रोग से पीड़ित होंगे। पारिवारिक झगड़े झंझटों से परेशान रहेंगे। उच्च रक्त अथवा रक्त सम्बन्धी किसी रोग से पीड़ित होंगे। 28 जनवरी प्रात: गोचर के शुक्र के सूर्य तथा बुध से वेध में आंकाक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति में अवरोध बनेंगे अपेक्षित सफलताओं का अभाव रहेगा। भोगोपभोग की वस्तुओं से हानि होगी। आरोग्य

ग्रहण विवरण विक्रमी संवत् 2082 (सन् 2025-26 ई॰)

आंङ्गल वर्ष जनवरी सन् 2025 से मार्च 2026 तक की अवधि में मध्य भू -मंड़ल पर 03 सूर्य ग्रहण तथा 03 चन्द्रग्रहण होंगे। इस प्रकार इस अवधि में कुल छः ग्रहण होंगे। विक्रमी संवत् 2082 में दो सूर्य ग्रहण तथा 02 चन्द्रग्रहण होंगे। इनमें भी एक खग्रास सूर्य ग्रहण तथा एक खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। 07-08 सितम्बर तथा 03 मार्च 2026 का चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई पड़ेगा।

14 मार्च 2025 खग्रास चन्द्रग्रहण

खग्रास चन्द्रग्रहण यूरोप, एशिया महाद्वीप, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश भागों, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, पैसिफिक, अटलान्टिक, आर्कटिक एवं अन्टारकटिका में दृष्य रहेगा। कांसाब्लांका, डबलिन, लिस्बन, पेरु, न्यूयार्क, होनोलूलू, सेनफ्रांसिस्को, मोन्ट्रायल, साओ पाउलो ब्राजील, ब्यूनस आयर्स, हवाना, लोस ऐन्जेलस, शिकागो, ग्वेटामाला, डेट्रायट, मेक्सिको, सेन्टिगो, बुडापेस्ट, टोक्यो रोम, स्टाकहोम, एथेंस मेडरिड, पेरिस, ब्रस्लस, अमेस्टरडम, लागोस में खण्डग्रास ग्रहण दिखाई पड़ेगा। ग्रहण दृष्य स्थानों पर ग्रहण का प्रभाव 07 दिनों तक रहेगा। ग्रहण भारत में दृष्य न होने से इसका धार्मिक महत्व नहीं है।

ग्रहण स्पर्श : 09:27:28 (भा.मा.स.)

ग्रहण प्रारम्भ : 10:39:40 (भा.मा.स.)

खग्रास ग्रहण : 11:56: 06 (भा.मा.स.)

ग्रहण मध्य : 12:28:43 (भा.मा.स.)

खग्रास ग्रहण समाप्त : 13:01:26(भा.मा.स.)

मोक्ष : 15:30:09 (भा.मा.स.)

मेग्नीटयूड : 1.178

ग्रहण अवधि : 06घंटा 03 मिनिट

ग्रहण प्रभाव से प्रजा में क्षेम कल्याण रहेगा। विद्वतवर्ग पीड़ित होगा। वायु वेग के साथ वर्षा होगी। कृषि उत्पादन उत्तम होगा। धान्यों के भाव साधारण रहेंगे। दलहन, चांदी, मोती, सभी प्रकार की धातुयें, श्वेत वस्त्र, धान्य, किराना, रसकस, सभी प्रकार के हर्बल्स, यूनानी तथा आयुर्वेदिक औषधियां मंहगी होगी। रुई के भावों में गिरावट आयेगी, संग्रह कर तीन मास पश्चात बेचने से लाभ होगा। चावल तथा चना के संग्रह से लाभ मिलेगा। शिपिंग तथा एन्टरटेन्मेन्ट इण्डस्ट्री, आयुध तथा औषधी निर्मात्री कम्पनीज के कामकाज में अवरोध आयेंगे। सत्ता के केन्द्र बिदुंओं के लिये सघंर्ष बढ़ेगा। राजनैतिक विवाद रहेंगे। किन्हीं स्थानों पर उपद्रव होंगे। हाई नेट वर्थ के व्यक्ति, मनी लेन्डर्स, कृष्क तथा सैन्य वर्ग हानि उठायेंगे। ग्रहण ग्रस्त देशों के पश्चिमी-दक्षिणी प्रान्तों में दुर्भिक्ष, युद्ध, महामारी, उपद्रवों, अग्निकांडों आंधियों का प्रकोप बनेगा। शारदीय कृषि की हानि होगी। महिला वर्ग के हितार्थ कार्य होंगे। सभी व्यापारिक वस्तुओं सोना, रत्न, कपूर, केसर, चांदी, मोती, श्वेत वस्त्रों, उड़द आदि काले धान्य, लोहा आदि काली रंग की वस्तुओं में तेजी चलेगी। टैक्स चोरी तथा भ्रष्टाचार की घटनायें घटित होंगी।

पीयूष रैणा
अभियन्ता

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों पर ग्रहण का प्रभाव

[redacted]	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
[redacted]	अपमान	सिद्धि	लाभ	हानि	घात	हानि	धनप्राप्ती	विध्वंस	चिन्ता	सौख्य	दम्पतिवियोग	रोग

खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण 29 मार्च 2025

खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण यूरोप, एशिया महाद्वीप के उत्तरी भागों, उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका के अधिकांश भागों, दक्षिण अमेरिका के उत्तरी भागों, अटलान्टिक एवं आर्कटिक में दृश्य रहेगा। कुछ प्रमुख शहरो हेमिल्टन, पोन्टाडेलागाडा, हेलिक्स, सेन्ट पियरे, न्यूयार्क, डबलिन, पेरिस, डगलस, लन्दन, मोन्ट्रियाल में आंशिक सूर्य ग्रहण दिखाई पड़ेगा। भारत में ग्रहण दिखाई न पड़ने से इसका धार्मिक महत्व नहीं है।

ग्रहण प्रारम्भ 29 मार्च : 14:20:43 (भा.मा.स.)

ग्रहण मध्य 29 मार्च : 16:17:27 (भा.मा.स.)

मोक्ष 29 मार्च : 18:13:45 (भा.मा.स.)

मेग्न्टियूड : 0.938

ग्रहण ग्रस्त देशों के अनेक भागों में अशांति रहेगी। उत्तरी क्षेत्र विशेष रूप से प्रभावित होंगे। राजनीति में किचन कैबिनेट का प्रभाव बढ़ेगा। हाई नेट वर्थ, बुद्धिजीवी,

आंध्र प्रदेश, बिहार, चण्डीगढ़, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, केरल, लक्षद्वीप, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पुडुचेरी, पंजाब, राजस्थान, सिकिकम, तमिलनाड, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश , उत्तराखंड में खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दृष्य होगा।

ग्रहण का प्रभाव 07 दिनों तक रहेगा। वर्षा में कमी से शारदीय धान्यों की हानि होगी। कपास, रुई, सूत, कपड़ा, चांदी, जस्ता, राई, मेथी, मोती, सुपारी, नारियल मजीठ, हींग, फल, घी, सभी प्रकार के तेल, गुड़, खांड़, तांबा, मूंगा, मूंग आदि दलहन, गेहूँ, चावल, नमक, नारियल, शहद, चावल तथा चना आदि का संग्रह कर चार मास पश्चात बेचने से लाभ होगा। लाल रंग की सभी वस्तुओं की हानि से सभी प्रकार के लाल रंग के पदार्थों में तथा रसकसों में तेजी चलेगी। शहद, तैल, घी, मक्का, आदि पीले रंग के धान्यों, सोना पीतल आदि पीली वस्तुओं के भाव मंहगे रहेंगे। तेज हवाओं, आंधियों तथा अग्निकांडों से हानि होगी। बंगाल तथा मध्य प्रदेश में राजनैतिक विवाद होंगे। प्रशासन में उच्चाधिकारियों की स्थिति विकट रहेगी। राज्य सरकारों में परस्पर खींचतान बढ़ेगी। बुद्धिजीवी वर्ग तथा सैन्य, अर्धसैनिक बलों, आयुध निर्मात्री इकाईयों में असंतोष रहेगा।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों पर ग्रहण का प्रभाव

[redacted]	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
[redacted]	अपमान	सिद्धि	लाभ	हानि	घात	हानि	धनप्राप्ती	विध्वंस	चिन्ता	सौख्य	दम्पतिवियोग	रोग

ग्रहण की अवधि में सभी जल गंगा के समान पवित्र कहे गये है तथापि गर्म जल की अपेक्षा ठंडे पानी से स्नान अधिक पुण्यकारक माना गया है। अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त जल की अपेक्षा स्वयं पानी लेकर स्नान करना श्रेष्ठ है। नदी, तालाब, सरोवर, समुद्र का जल पुण्यप्रद है। यदि इनमें से किसी स्थान पर जाकर स्नान करना सम्भव न हो तो स्नान के जल में सरसों, कूठ, हल्दी, दारु हल्दी, लोध्र, लाजा, सफली तथा मुरामांसी - इन औषधियों को जल में ड़ालकर स्नान करने से ग्रहण के अनिष्ट फलों का नाश होता है, सूर्यादि सम्पूर्ण ग्रह शुभ फलदायक हो जाते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वरीय अंश विराजमान है। कभी भी किसी को भी मन से तथा कर्म से किसी के मन को ठेस मत पहुँचाओ, कष्ट मत दो, यही सब से बड़ा व्रत और पूजा है। सत्कर्म एकत्रित करो ईश्वर प्रत्येक के कर्म को देख रहे हैं, वह हम से दूर नहीं हैं वह प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में रमण कर रहे हैं।

'श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग' ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्रिका, वर्षफल शुद्ध गणित से कम्प्यूटर की सहायता से बनाये जाते हैं विद्या में सफलता, व्यवसाय सम्बंधी प्रश्न, विवाह, सन्तान, विदेश यात्रा, पारिवारिक सुख, इत्यादि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ग्रहों के आधार पर शास्त्रीय विधिविधान से अनुशीलन करके दिये जाते हैं।

संक्षिप्त जन्मपत्रिका – अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता, दादा का नाम, गोत्र जाति इत्यादि भेजें या स्वयं आकर लिखवायें। फीस 1000 रुपये होगी, विदेश में उत्पन्न जातक की पत्रिका के लिए 1500 रुपये देय होंगे।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री – आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा विवाहादि के सन्दर्भ में विस्तृत विवरण दिया जाता है। वृहद् जन्मपत्री की फीस 2500 से 3100 रुपये तक होगी।

वर्षफल – आपका वर्ष कैसा बीतेगा इसके लिए जन्मपत्रिका की फोटो कापी भेजना आवश्यक है। यदि जन्मपत्री नहीं है तो पत्र लिखने का समय, तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश की फीस 1000 से 1500 रुपये तक होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें।

कर्मकाण्ड सम्बंधी – हमारे यहाँ उच्चकोटि के कर्मकाण्डी विद्वान् हैं विवाह, पूजा, जप, अनुष्ठानादि के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। ग्रहों के शान्त्यर्थ, समस्त समाधान हेतु शास्त्रीय विधिविधान से अनुष्ठान करवाये जाते हैं।

डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा सहाचार्य (सेवानिवृत्त) ज्योतिष जी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें।

संचालक

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, 44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू

दूरभाष एवं फैक्स : 0191-3555681,

मोबाईल : 094191-94230, 6005569931

ई-मेल : drcmraina@gmail.com

वैदिक यज्ञ विधान मंत्र संग्रह

संकलनकर्ता : डॉ॰ विहारिलाल वसिष्ठ, भूतपूर्व ज्योतिष विभागाध्यक्ष
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, जम्मू

अथ शांतिः पाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसे दिमावयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भग-म्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसोविश्वे नोदेवाऽअवसा गमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवाऽआदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः।।

आयुष्यंवर्च्चस्वꣳरायस्पोषयꣳमौद्भिदम्। इद्ꣳहिरण्यंवर्च्चस्वज्जैत्रा विशतादुमाम्।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे-देबाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।

आत्मपूजा

पवित्रधारणम् :

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

अथवा

ॐ पवित्रेस्थो विष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आत्माभिषेक :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमनम् :

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

हस्तप्रक्षालनम् :

ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः। ॐ गोविन्दाय नमः।
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।

प्राणायाम :

ॐ भूभुर्वः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अङ्गन्यास :

ओं वाङ्मेऽआस्येऽस्तु। ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।

श्रीविक्रमी संवत् 2082 | **चैत्र शुक्ल पक्ष** | **शाकः 1947, सन् 2025 ई.** | **30 मार्च से 12 अप्रैल** | **सूर्योत्तरायणे, बसन्त ऋतौ, उत्तरगोलार्धे** | **दै. सूर्योदयास्त**

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श चैत्र	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
12	20	1	रवि	16	00	12	50	रेवती	25	23	16	35	ऐन्द्र	17	54	ब	12	50	मेष 16:35	9	17	30	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, **नवचान्द्र संवत्सर प्रारंभ, वासन्त नवरात्र**A	06	25	18	45
12	22	2	सोम	06	58	09	11	अश्वि	18	22	13	45	वैधृ	13	46	कौ	09	11	मेष	10	18	31	गौरी तृतीया, **मत्स्योत्पत्तिः सौभाग्य शयन व्रत**, शिवशक्ति पूजा,**B**	06	24	18	46
0	0	3	सोम	58	16	29	43	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	तृतीया तिथि क्षय **C** रवियोग 8:50 तक	0	0	0	0
12	24	4	मंग	50	25	26	33	भरणी	11	49	11	07	विष्कं प्रीति	09 30	48 07	व	16	05	वृष 16:29	11	19	अप्रै.	भद्रा 16:05 से 26:33 तक, रवियोग 11:07 बाद	06	23	18	47
12	26	5	बुध	43	41	23	50	कृति	06	10	08	50	आयु.	26	50	ब	13	08	वृष	12	20	2	**श्रीलक्ष्मी पञ्चमी, मंगल कर्क में रात्रि** 1:22, स.सि.योग 8:50 तक,**C**	06	21	18	47
12	28	6	गुरु	38	24	21	42	रोहि मृग्	01 58	45 44	07 29	02 49	सौभा	24	01	कौ	10	41	मि.18:21	13	21	3	**स्कन्दषष्ठी व्रत**, वक्री बुध पू.भा. में 18:42, बुधोदयः पूर्वे 13:33,**D**	06	20	18	48
12	30	7	शुक्र	34	45	20	13	आर्द्रा	57	33	29	20	शोभ	21	45	ग	08	52	मिथुन	14	22	4	भद्रा 20:13 से **सिद्धार्थी संवत्सर**	06	19	18	49
12	32	8	शनि	32	53	19	27	पुन	58	06	29	32	अति	20	03	वि	07	45	कर्क 23:24	15	23	5	**श्रीदुर्गाष्टमी**, अन्नपूर्णा पूजनम्, मेला कांगड़ा देवी नैना देवी (हि.प्र.)**E**	06	18	18	49
12	34	9	रवि	32	47	19	23	पुष्य	60	00	00	00	सुक	18	55	बा	07	20	कर्क	16	24	6	**श्रीराम नवमी, श्रीदुर्गा नवमी नवरात्र समाप्त, रवि पुष्य योग,F**	06	16	18	50
12	36	10	सोम	34	23	20	00	पुष्य	00	24	06	25	धृति	18	19	तै	07	37	कर्क	17	25	7	बुध मार्गी 16:38, **शनेरूदयः पूर्वस्याम्** 29:18, **व्रतबन्धदशमी,G**	06	15	18	51
12	38	11	मंग	37	28	21	13	आश्ले	04	13	07	55	शूल	18	10	व	08	33	सिंह 7:55	18	26	8	**कामदा एकादशी व्रत**, भद्रा 8:33 से 21:13 तक, लक्ष्मीकान्त**H**	06	14	18	52
12	40	12	बुध	41	48	22	56	मघा	09	21	09	57	गंड	18	25	ब	10	01	सिंह	19	27	9	सिद्धयोग, गण्डमूल 9:57 तक	06	12	18	52
12	42	13	गुरु	47	04	25	01	पू.फा.	15	33	12	25	वृद्धि	18	59	कौ	11	56	कन्या 19:04	20	28	10	**प्रदोष व्रत**, जैन महावीर जयन्ती, **अनङ्गत्रयोदशी** रवियोग 12:25 बाद,**I**	06	11	18	53
12	44	14	शुक्र	52	59	27	22	उ.फा.	22	30	15	10	ध्रुव	19	45	ग	14	10	कन्या	21	29	11	भद्रा 27:22 से, बुध उ.भा. में 17:28, अमृतयोग, **J**	06	10	18	54
12	46	15	शनि	59	18	29	52	हस्त	29	57	18	08	व्याघा	20	40	वि	16	36	कन्या	22	30	12	**पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा 16:36 तक,**K**	06	09	18	54

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 5 अप्रैल सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	02	03	11	01	11	11	11	05
21	20	00	02	22	01	00	02	02
15	05	44	53	24	43	54	18	18
01	54	08	07	02	05	04	03	03
59	780	21	10	09	18	07	03	03
05	13	52	59	58	03	01	11	11
शी	शी	मा उ	व उ	मा उ	व उ	मा अ	व अ	व अ
रेव 2	पुन. 1	पुन. 4	पू.भा. 4	रोहि 4	पू.भा. 4	पू.भा. 4	पू.भा. 4	उ.फा 2

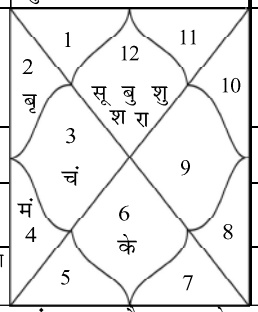

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:18

पूर्णिमायां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 12 अप्रैल सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	05	03	11	01	11	11	11	05
28	17	03	03	23	00	01	01	01
07	06	19	30	35	26	34	56	56
43	14	05	03	00	02	04	00	00
58	649	23	25	10	01	06	03	03
49	33	02	02	05	53	59	11	11
शी	शी	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व अ	व अ
रेव. 4	हस्त 3	पुन. 4	उ.भा. 1	मृग् 1	पू.भा. 4	पू.भा. 4	पू.भा. 4	उ.फा. 2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:09

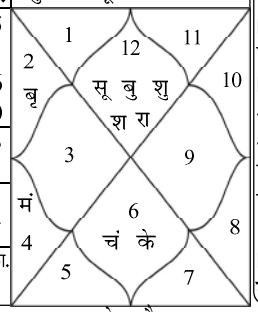

A प्रारम्भ पञ्चक समाप्त 16:35, **घटस्थापनम्, ज्योतिष दिवस**, गण्डमूल **B** वक्री शुक्र पू.भा. में 28:47, गण्डमूल 13:45 तक, सूर्य रेवती में 13:58 **D** रवियोग 7:2 बाद **E मेला बाहुफोर्ट (जम्मू)**, भद्रा 7:45 तक, अशोक कलिका प्राशनम् **F स.सि.योग G** अमृतयोग, गण्डमूल शुरू 6:25, रवियोग 6:25 बाद **H** दोलोत्सवः, स.सि. योग 7:55 तक गण्डमूल, रवियोग 7:55 तक **I** गुरु मृग्शिरा में 18:51, अमृतयोग **J** रवियोग 15:10 तक **K श्रीहनुमान जयन्ती**, मंगल पुष्य में 6:03, **वैशाखस्नानारम्भ- चित्रान्नदानं भक्षणञ्च**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– नवसंवत्सर– चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवसंवत्सर का आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इस तिथि से पितामह ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण प्रारम्भ किया था– **"चैत्रमासे जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽह्नि। शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति॥"** इस तिथि को रेवती नक्षत्र में विष्कुम्भ योग में दिन के समय भगवान के आदि अवतार मत्स्यरूप का प्रादुर्भाव भी माना जाता है **"कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा। रेवत्यां योग विष्कुम्भे दिवा द्वादश नाडिकाः। मत्स्यरूपकुमार्यां च अवतीर्णो हरिः स्वयम्** (स्मृतकौस्तुभ) युगों में प्रथम सत्ययुग का प्रारम्भ भी इस तिथि को भी हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्त्व की भी है। इस दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनाने के लिए विक्रम-संवत् का प्रारम्भ किया था। **श्रीराम नवमी–** श्रीराम नवमी सारे जगत् के लिए सौभाग्य का (शेष पृष्ठ 221 पर)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2082	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या तक	मार्च-अप्रैल, सन् 2025 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि मार्च	विक्रमी संवत् चैत्र	शक संवत् चैत्र	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ. मिं.		सूर्यास्त घ. मिं.	
चैत्र शुक्ल पक्ष	30	17	9	रवि	1	12	50	रेवती	16	35	ऐन्द्र	17	54	मेष 16:35	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, **नवचान्द्र संवत्सर प्रारंभ, वासन्त नवरात्र, पञ्चक समाप्त A**	06	25	18	45
	31	18	10	सोम	2	09	11	अश्वि	13	45	वैधृ	13	46	मेष	गौरी तृतीया, **मत्स्योत्पत्तिः**, सौभाग्य शयन व्रत, शिवशक्ति पूजा, वक्री शुक्र **B**	06	24	18	46
	0	0	0	सोम	3	29	43	0	0	0	0	0	0	0	तृतीया तिथ क्षय **A** 16:35, **घटस्थापनम्, ज्योतिष दिवस**, गण्डमूल	0	0	0	0
	अप्रैल	19	11	मंग	4	26	33	भरणी	11	07	त्रिष्कं प्रीति	09 30	48 07	वृष 16:29	भद्रा 16:05 से 26:33 तक, रवियोग 11:07 बाद **C** 8:50 तक	06	23	18	47
	2	20	12	बुध	5	23	50	कृति	08	50	आयु.	26	50	वृष	**श्रीलक्ष्मी पञ्चमी, मंगल कर्क में रात्रि** 1:22, स.सि.योग 8:50 तक, रवियोग **C**	06	21	18	47
	3	21	13	गुरु	6	21	42	रोहि मृग्	07 29	02 49	सौभा	24	01	मि.18:21	**स्कन्दषष्ठी व्रत**, वक्री बुध पू.भा. में 18:42, बुधोदयः पूर्वे 13:33, रवियोग **D**	06	20	18	48
	4	22	14	शुक्र	7	20	13	आर्द्रा	29	20	शोभ	21	45	मिथुन	भद्रा 20:13 से **सिद्धार्थी संवत्सर** **D** 7:2 बाद	06	19	18	49
	5	23	15	शनि	8	19	27	पुन	29	32	अति	20	03	कर्क 23:24	**श्रीदुर्गाष्टमी,** अन्नपूर्णा पूजनम्, मेला कांगड़ा देवी, नैना देवी (हि.प्र.) **@**	06	18	18	49
	6	24	16	रवि	9	19	23	पुष्य	0	0	सुक	18	55	कर्क	**श्रीराम नवमी, श्रीदुर्गा नवमी, नवरात्र समाप्त, रवि पुष्य योग, स.सि.योग**	06	16	18	50
	7	25	17	सोम	10	20	00	पुष्य	06	25	धृति	18	19	कर्क	बुध मार्गी 16:38, **शनेरूदयः पूर्वस्याम्** 29:18, **व्रतबन्धदशमी,** अमृतयोग, **E**	06	15	18	51
	8	26	18	मंग	11	21	13	आश्ले	07	55	शूल	18	10	सिंह 7:55	**कामदा एकादशी व्रत,** भद्रा 8:33 से 21:13 तक, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सवः, **F**	06	14	18	52
	9	27	19	बुध	12	22	56	मघा	09	57	गंड	18	25	सिंह	सिद्धयोग, गण्डमूल 9:57 तक **G** अमृतयोग	06	12	18	52
	10	28	20	गुरु	13	25	01	पू.फा.	12	25	वृद्धि	18	59	कन्या 19:04	**प्रदोष व्रत,** जैन महावीर जयन्ती, रवियोग 12:25 बाद, गुरु मृगशिरा में 18:51, **G**	06	11	18	53
	11	29	21	शुक्र	14	27	22	उ.फा.	15	10	ध्रुव	19	45	कन्या	भद्रा 27:22 से, बुध उ.भा. में 17:28, अमृतयोग, अनङ्गत्रयोदशी, रवियोग 15:10 तक	06	10	18	54
	12	30	22	शनि	15	29	52	हस्त	18	08	व्याघा	20	40	कन्या	**पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत,** भद्रा 16:36 तक, **श्रीहनुमान जयन्ती, H**	06	9	18	54
वैशाख कृष्ण पक्ष	13	वैशाख 23		रवि	1	00	00	चित्रा	21	11	हर्षण	21	39	तुला 7:38	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा, **मेष संक्रान्ति**, सूर्य अश्विनी में अर्द्धरात्रौपरि 27:20, **I**	06	8	18	55
	14	2	24	सोम	1	08	25	स्वाति	24	13	वज्र	22	38	तुला	**@ मेला बाहुफोर्ट (जम्मू)**, भद्रा 7:45 तक, अशोक कलिका प्राशनम्	06	6	18	56
	15	3	25	मंग	2	10	56	विशा.	27	10	सिद्धि	23	32	वृ. 20:26	भद्रा 24:07 से, अमृतयोग 10:56 तक, त्रिपुष्कर योग	06	5	18	56
	16	4	26	बुध	3	13	17	अनु	29	55	व्यती	24	18	वृश्चिक	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय** 22:09 जम्मू, भद्रा 13:17 तक, स.सि.योग, **J**	06	4	18	57
	17	5	27	गुरु	4	15	24	ज्येष्ठ	0	0	वरीय	24	50	वृश्चिक	अनुसूयाजयन्ती, गण्डमूल **I** शुक्रमार्गी 6:33, मेला वैशाखी (पञ्जाब जम्मू)	06	3	18	58
	18	6	28	शुक्र	5	17	08	ज्येष्ठ	08	21	परिघ	25	03	धनु 8:21	**अगस्त्यास्तः, श्रीगुरुतेगबहादुर जयन्ती,** गण्डमूल	06	2	18	59
	19	7	29	शनि	6	18	22	मूल	10	21	शिव	24	53	धनु	भद्रा 18:22 से, सायन सूर्य वृष में 25:05, **ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ,** अमृतयोग, **K**	06	0	18	59
	20	8	30	रवि	7	19	01	पू.षा.	11	43	सिद्ध	24	12	मकर 18:03	भद्रा 6:47 तक, **श्रीगुरु अर्जुनदेव जयन्ती,** त्रिपुष्कर योग 11:43 बाद, रवियोग **L**	05	59	19	0
	21	9	वैशाख	सोम	8	18	59	उ.षा.	12	37	साध्य	23	0	मकर	भा. वैशाख प्रारम्भ **E** गण्डमूल शुरू 6:25, रवियोग 6:25 बाद	05	53	19	01
	22	10	2	मंग	9	18	13	श्रवण	12	44	शुभ	21	13	कुंभ 24:30	**पञ्चक प्रारम्भ** 24:30 **K** गण्डमूल 10:21 तक, रवियोग 10:21 बाद	05	57	19	01
	23	11	3	बुध	10	16	44	धनि	12	08	शुक्ल	18	51	कुंभ	भद्रा प्रातः 5:35 से 16:44 तक **L** 11:43 तक	05	56	19	02
	24	12	3	गुरु	11	14	33	शत.	10	49	ब्रह्म	15	55	मीन 27:25	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** श्री वल्लभाचार्य जयन्ती **J** गण्डमूल 29:55 से	05	55	19	03
	25	13	4	शुक्र	12	11	45	पू.भा.	08	53	ऐन्द्र	12	30	मीन	**प्रदोष व्रत,** मार्गी शुक्र उ.भा. में 23:30 **M** गण्डमूल प्रारम्भ 6:27	05	54	19	04
	26	14	6	शनि	13	08	28	उ.भा. रेवती	06 27	27 39	वैधृ	08	41	मेष 27:39	भद्रा 8:28 से 18:40 तक, **पञ्चक समाप्त** 27:39, **मासिक शिवरात्रि व्रत, M**	05	53	19	04
	0	0	0	शनि	14	28	50	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय **N** गण्डमूल 24:39 तक	0	0	0	0
	27	15	7	रवि	30	25	01	अश्वि	24	39	प्रीति	24	19	मेष	**देवपितृकार्येऽमावस,** सूर्य भरणी में 19:08, बुध रेवती में 15:29, स.सि. योग, **N**	05	52	19	05

B पू.भा. में 28:47, गण्डमूल 13:45 तक, सूर्य रेवती में 13:58 **F** स.सि. योग 7:55 तक गण्डमूल, रवियोग 7:55 तक **H** मंगल पुष्य में 6:03, **वैशाखस्नानारम्भ- चित्रान्नदानं भक्षणञ्च**

शुभ विवाह मुहूर्त्त विक्रमी संवत् 2082 (सन् 2025-26 ई॰)

मुहूर्त्तनिर्णेता : **पं॰ रवीन्द्र रैणा,** बी॰एस॰सी॰एल॰एल॰बी॰, रैणा ज्योतिष कार्यालय, बी. सी. रोड, जम्मू, मोबाईल 9419189111
पं॰ विनय शास्त्री, तालाब तिल्लो, जम्मू, मोबाईल : 9419149757
डॉ॰ रामदास शर्मा, आचार्य ज्योतिष, **श्री प्रवीण जैन** ज्योतिर्विद

(1) **वृहस्पति अस्त–** विक्रमी संवत् 2082 सन् 2025-26 ई. में वृहस्पति अस्त 11 जून बुधवार को पश्चिम में अस्त होकर 5 जुलाई शनिवार को पूर्व में उदित हो जाएगा।

(2) **शुक्रास्त–** 13 दिसम्बर सन् 2025 ई. शनिवार को पूर्व में अस्त होकर 30 जनवरी सन् 2026 ई. को पश्चिम में उदित होगा। ध्यान दें– गुरु/शुक्र के अस्त दिन से तीन दिन पूर्व **वार्धक्य-दोष** और उदय काल के तीन दिन पश्चात् **वाल्यत्वदोष** होता है। इन वार्धक्य एवं वाल्यत्व दोष के दिनों में शुभ कार्य वर्जित होते हैं।

काल शुद्धि

(3) **श्राद्धकाल–** 7 सितम्बर से 21 सितम्बर 2025 ई. तक श्राद्ध पक्ष रहेगा।

(4) **भीष्म पञ्चक विचार–** 1 नवम्बर से 5 नवम्बर तक भीष्म पञ्चक रहेंगे। जम्मू डुग्गर प्रदेश में परम्परा अनुसार विवाहादि शुभ कार्य वर्जित माने गये हैं परन्तु अन्य प्रान्तों में भीष्म पञ्चकों में विवाह होते हैं अत: विवाह मुहूर्त लगाए गये हैं विद्वान स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

(5) **होलाष्टक–** 24 फरवरी से मार्च सन् 2026 ई. तक होलोष्टक रहेंगे, इन दिनों में विवादि मंगल कार्य वर्जित हैं।

सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

(1) विवाह मुहूर्त में ग्रहों का दान विशेष लिखा रहता है। जिन ग्रहों का दोष आता है उनको कोष्टक में लिख दिया है।

(2) पादवेध, मृत्युवाण, क्रूरग्रहवेध, भद्रा इत्यादि का विचार करके ही मुहूर्त लिखे गये हैं। वृहस्पति/बुध/शुक्र इत्यादि के केन्द्र में आ जाने पर परिहार मान कर मुहूर्त लगाये गये हैं।

(3) **समयबोध–** सूर्योदय से लेकर दिन के 12 बजे तक तत्पश्चात् समय संख्या 13 से 24, तत्पश्चात् 25 से 30 तक लिखी गई है, जैसे आधी रात के पश्चात् रात्रि 2 बजे का संकेत 26 बजे का रहेगा। तीन बजे का 27 बजे रहेगा।

वैशाख मास (अप्रैल-मई) विवाह मुहूर्त सन् 2025 ई. वि.सं. 2082

पक्ष-तिथि	वार	दिनांक	मास प्रविष्टा	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
वैशा. कृ. 2	सोम	14 अप्रैल	2 वैशाख	स्वाति	तुला	मेष	वृष	।।0।।।00।।	रा.ल. 8 रात्रि 23:34 से 1:46 तक (मं. वृ. पूज्य), रा. ल. 9, रात्रि 23:34 से 1:46 तक (मं. वृ. पूज्य)
वैशा.कृ. 4	बुध	16 अप्रैल	4 वैशाख	अनुराधा	वृश्चिक	मेष	वृष	।।0।।।।।।।	दिवा भद्रा 12:17 तक व्यतीपात 24:18 तक, रा.ल. 11 आर्द्धरात्रौपरि 3:17 से 4:40 तक (केन्द्रे गुरु)
वैशा.कृ. 5	शुक्र	18 अप्रैल	6 वैशाख	मूल	धनु	मेष	वृष	।।।।0।00।।	दि.ल 5, दिवा 13:56 से 16:13 तक (बु.शु)
वैशा.कृ. 6	शुक्र	18 अप्रैल	6 वैशाख	मूल	धनु	मेष	वृष	।।।।0।00।0	रा.ल. 8 रात्रि 21:02 से 23:23 तक (गु. पूज्य) रा.ल. 9 रात्रि 23:23 से 25:30 तक (चं.मं.गु. पूज्य)
वैशा.कृ. 6	शुक्र	18 अप्रैल	6 वैशाख	मूल	धनु	मेष	वृष	।।।।0।।0।0	रा.ल. 11 अर्द्धरात्रौपरि 3:09 से 4:32 तक (दग्धापरिहार)
वैशा.कृ. 6	शनि	19 अप्रैल	7 वैशाख	मूल	धनु	मेष	वृष	।।।।0।।0।0	दि.ल 2 प्रात: 7:19 से 9:13 तक (चं. दान) केन्द्रे गुरु
वैशा.कृ. 7	रवि	20 अप्रैल	8 वैशाख	उ.षा.	धनु	मेष	वृष	0।।0।।।0।।	दि.ल. 4 दिवा 11:43 से 13:43 तक (मं. दान) गोधूलि
वैशा.कृ. 7	रवि	20 अप्रैल	8 वैशाख	उ.षा.	मकर	मेष	वृष	0।।0।।।0।।	रा.ल. 8, रात्रि 20:55 से 23:15 तक (गु. दान), ल. 9, 23:15 से 25:22 (मंग.गु. पूज्य)

ॐ श्री गणेशाय नमः

श्रीसद्गुरवे नमः

विविधमुहूर्ताः

गर्भाधानसंस्कार मुहूर्त्त

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च संध्याभौमार्काकीनाद्यरात्रीश्चतस्त्रः।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वाती विष्णुवस्वम्बुपे सत्॥ (मु॰चि॰ मणि)

भद्रा, षष्ठी, पर्व (अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा) एवं रिक्ता (४, ९, १४) तिथियाँ, संध्याकाल, भौमरवि और शनिवार तथा ऋतुकाल की प्रथम चार रात्रियाँ गर्भाधान के लिए त्याज्य हैं तीनों उत्तरा (उ॰फा॰, उ॰षा॰उ॰भा॰) मृग्शिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा इन सभी नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है।

गर्भाधान में शुभ लग्न :-

लग्न से केन्द्र त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ९, ५) में शुभग्रह और ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों, लग्न को पुरुषग्रह देखते हों, चन्द्रमा विषम राशि और विषम राशि के नवांश में हो, समरात्रि में गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्विनी नक्षत्रों को गर्भाधान के लिए मध्यम कहा है।

गर्भाधान मुहूर्त्त चक्र

श्रेष्ठनक्षत्र	रो॰ हस्त, स्वाती, मृग॰ अनु॰श्र॰ध॰ शतभिषा, तीनों उत्तरा
मध्यम नक्षत्र	पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा
लग्न	१-४-५-७-९-१० पापग्रहों की स्थिति ३, ६, ११वें हो
नवांश	१, ३, ५, ७, ९, ११
रात्रियाँ	रजोदर्शन से ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं

गर्भ मासो के स्वामी तथा स्त्री पुरुष के चन्द्र बल की विशेषता।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

शुक्र, भौम, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, गर्भाधानकालिक लग्नपति चन्द्र तथा सूर्य क्रम से गर्भ के प्रथमादि मासों के अधिपति होते हैं। विवाह एवं गर्भकालिक संस्कारों में स्त्री का चन्द्रबल तथा इनसे भिन्न कार्यों में पति के चन्द्रबल को देखना चाहिए।

पुंसवन का मुहूर्त्त अथवा विष्णुपूजन मुहूर्त्त

पुंसवनसंस्कार सीमन्तोन्नयन से पूर्व किया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य है गर्भ में पुरुष जातक हेतु संस्कार करना। 'पुमान् सूयतेऽनेन कर्मणेति पुंसवनम्', गर्भस्थ शिशु का पुत्र अथवा पुत्री सम्बंधी विभाजन तीसरे मास में हो जाता है अतः पुंसवन संस्कार तीसरे मास में ही युक्तिसंगत है सीमान्तसंस्कार के लिए बताए जाने वाले तिथि वार नक्षत्रों में गर्भ के तीसरे मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिए। आठवें मास में श्रवन, रोहिणी औरपुष्प नक्षत्रों में, शुभ लग्न में, अष्टम भाव शुद्ध रहने पर गर्भिणी को विष्णु पूजन करना चाहिए।

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त चक्रम्

मास	गर्भ से तीसरे मास में तथा मासाधिपति के बलवान होने पर ६, ८	लग्न	१-३-५-७-११
तिथि	शुक्लपक्ष की १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ कृष्ण पक्ष के १ से १० तक	वार	रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र भी
नक्षत्र	रो॰ मृग्॰ पुष्य, पुन॰ हस्त, मूल श्रवन तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र छोड़कर)		

स्तनपान कराने का मुहूर्त्त

जन्म से पाँचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति, ४, ९, १४ तिथि को त्याग कर शुभतिथि में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवारों में पुन॰ पुष्प, मृ॰ मघा श्रवण, रेवती नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान शुभ है।

दैनिक लग्न सारणी **अप्रैल** भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जम्मू **2025**

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
तारीख	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
1	06:57:08	08:28:21	10:21:46	12:37:24	15:01:14	17:22:58	19:43:50	22:07:21	00:32:01	02:34:59	04:13:45	05:36:44
2	06:53:12	08:24:25	10:17:50	12:33:28	14:57:18	17:19:02	19:39:54	22:03:26	00:28:05	02:31:03	04:09:49	05:32:48
3	06:49:16	08:20:29	10:13:54	12:29:32	14:53:22	17:15:07	19:35:58	21:59:30	00:24:09	02:27:07	04:05:53	05:28:53
4	06:45:20	08:16:33	10:09:53	12:25:36	14:49:26	17:11:11	19:32:02	21:55:34	00:20:13	02:23:11	04:01:58	05:24:57
5	06:41:24	08:12:37	10:06:02	12:21:40	14:45:30	17:07:15	19:28:07	21:51:38	00:16:17	02:19:15	03:58:02	05:21:01
6	06:37:29	08:08:42	10:02:06	12:17:44	14:41:34	17:03:19	19:24:11	21:47:42	00:12:21	02:15:19	03:54:06	05:17:05
7	06:33:33	08:04:46	09:58:10	12:13:49	14:37:35	16:59:23	19:20:15	21:43:46	00:08:25	02:11:24	03:50:10	05:13:09
8	06:29:37	08:00:50	09:54:14	12:09:53	14:33:42	16:55:27	19:16:19	21:39:50	00:04:29	02:07:28	03:46:14	05:09:13
9	06:25:41	07:56:54	09:50:18	12:05:57	14:29:47	16:51:31	19:12:23	21:35:54	00:00:34	02:03:32	03:42:18	05:05:17
10	06:21:45	07:52:58	09:46:23	12:02:01	14:25:51	16:47:35	19:08:27	21:31:58	23:52:41	01:59:36	03:38:22	05:01:21
11	06:17:49	07:49:02	09:42:27	11:58:05	14:21:55	16:43:39	19:04:31	21:28:02	23:48:46	01:55:40	03:34:26	04:57:25
12	06:13:53	07:45:06	09:38:31	11:54:09	14:17:59	16:39:43	19:00:35	21:24:07	23:44:50	01:51:44	03:30:30	04:53:29
13	06:09:57	07:41:10	09:34:35	11:50:13	14:14:03	16:35:48	18:56:39	21:20:11	23:40:54	01:47:48	03:26:34	04:49:34
14	06:06:01	07:37:14	09:30:39	11:46:17	14:10:07	16:31:52	18:52:43	21:16:15	23:36:58	01:43:52	03:22:39	04:45:38
15	06:02:05	07:33:18	09:26:43	11:42:21	14:06:11	16:27:56	18:48:48	21:12:19	23:33:02	01:39:56	03:18:43	04:41:42
16	05:58:09	07:29:22	09:22:47	11:38:25	14:02:15	16:24:00	18:44:52	21:08:23	23:29:06	01:36:00	03:14:47	04:37:46
17	05:54:14	07:25:27	09:18:51	11:34:30	13:58:19	16:20:04	18:40:56	21:04:27	23:25:10	01:32:05	03:10:51	04:33:50
18	05:50:18	07:21:31	09:14:55	11:30:34	13:54:23	16:16:08	18:37:00	21:00:31	23:21:14	01:28:09	03:06:55	04:29:54
19	05:46:22	07:17:35	09:10:59	11:26:38	13:50:28	16:12:12	18:33:04	20:56:35	23:17:18	01:24:13	03:02:59	04:25:58
20	05:42:26	07:13:39	09:07:04	11:22:42	13:46:32	16:08:16	18:29:08	20:52:39	23:13:22	01:20:17	02:59:03	04:22:02
21	05:38:30	07:09:43	09:03:08	11:18:46	13:42:36	16:04:20	18:25:12	20:48:43	23:09:27	01:16:21	02:55:07	04:18:06
22	05:34:34	07:05:47	08:59:12	11:14:50	13:38:40	16:00:24	18:21:16	20:44:48	23:05:31	01:12:25	02:51:11	04:14:10
23	05:30:38	07:01:51	08:55:16	11:10:54	13:34:44	15:56:29	18:17:20	20:40:52	23:01:35	01:08:29	02:47:15	04:10:14
24	05:26:42	06:57:55	08:51:20	11:06:58	13:30:48	15:52:33	18:13:24	20:36:56	22:57:39	01:04:33	02:43:20	04:06:19
25	05:22:46	06:53:59	08:47:24	11:03:02	13:26:52	15:45:37	18:09:29	20:33:00	22:53:43	01:00:37	02:39:24	04:02:23
26	05:18:50	06:50:03	08:43:28	10:59:06	13:22:56	15:44:41	18:05:33	20:29:04	22:49:47	00:56:41	02:35:28	03:58:27
27	05:14:55	06:46:08	08:39:32	10:55:11	13:19:00	15:40:45	18:01:37	20:25:08	22:45:51	00:52:46	02:31:32	03:54:31
28	05:10:59	06:42:12	08:35:36	10:51:15	13:15:04	15:36:49	17:57:41	20:21:12	22:41:55	00:48:50	02:27:36	03:50:35
29	05:07:03	06:38:16	08:31:40	10:47:19	13:11:09	15:32:53	17:53:45	20:17:16	22:37:59	00:44:54	02:23:40	03:46:39
30	05:03:07	06:34:20	08:27:45	10:43:23	13:07:13	15:28:57	17:49:49	20:13:20	22:34:03	00:40:58	02:19:44	03:42:43

सम्पादक परिचय

नाम	:	डॉ. चन्द्रमौलि रैणा
माता / पिता	:	श्रीमती शान्ति देवी, पं. रामेश्वर दत्त रैणा
जन्म स्थान	:	पौराकोटला (शिवखोड़ी धाम), जिला रियासी (जम्मू कश्मीर)
शिक्षा	:	शास्त्री, फलितज्योतिषाचार्य, सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (पीएच.डी.)
भाषाज्ञान	:	संस्कृत, हिन्दी, इंग्लिश, डोगरी एवं पंजाबी
सेवावृत्ति	:	केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू से सहाचार्य ज्योतिष विभाग से सेवानिवृत।
सम्मान	:	महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय, लोकसभा सदस्यों तथा गणमान्य जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित, सनातन धर्म पथ परिषद् केन्द्र, पठानकोट के सौजन्य से 'लाइफटाईम अचीवमेंट अवार्ड–2024', केन्द्रिय ब्राह्मण सभा, पठानकोट से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2024', NAKSHATRA 27 RESEARCH CENTRE FOR ASTROLOGICAL SCIENCES UNIVERSITY (TRUST) ISO9001-2015 Certified से 'ज्योतिषीय पद्मविभूषण अवार्ड 2024', SHREEPATI ASTROVAASTU CONSULTACNY (Regd.) Internatiobnal Astrology and Vaastu Conference SMVD University, Katra (J&K), Life Time Achievement Award, 2023, Cosmic Healer Star Award-2022, भगवान परशुराम राष्ट्रिय पण्डित परिषद् ट्रस्ट, जयपुर 'अपराकाशी ज्योतिषरत्न सम्मान'।
सम्पादन	:	विभिन्न समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में आलेख प्रकाशित।
प्रकाशन	:	'धर्म भास्कर' कैलेण्डर, श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्, शास्त्रसौरभम् में सम्पादक एवं वृद्ध वसिष्ठसंहिता भाग 1–2 (सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक), श्री बाबा अमरनाथ वर्फानी जी की पूजा पद्धति (सम्पादक एवं संकलनकर्ता) 'कश्यपसंहिता' हिन्दी रूपान्तर सहित प्रकाशित, प्रकाशक चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी (उ.प्र.)
समाजसेवा	:	डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, चाणक्य चौक परेड एवं बावा कैलखदेव प्रबन्धक कमेटी जम्मू में सक्रिय भूमिका तथा **श्री अमरनाथ जी श्राइन बोर्ड के भूतपूर्व सदस्य, सनातन धर्म पथ परिषद् प्रधान (जम्मू–कश्मीर), श्रीशिवखोड़ी श्राइन बोर्ड के सदस्य**
संचालक		श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान (पञ्जीकृत), जम्मू
सम्पर्क सूत्र	:	09419194230, 6005569931
ई मेल	:	drcmraina@gmail.com

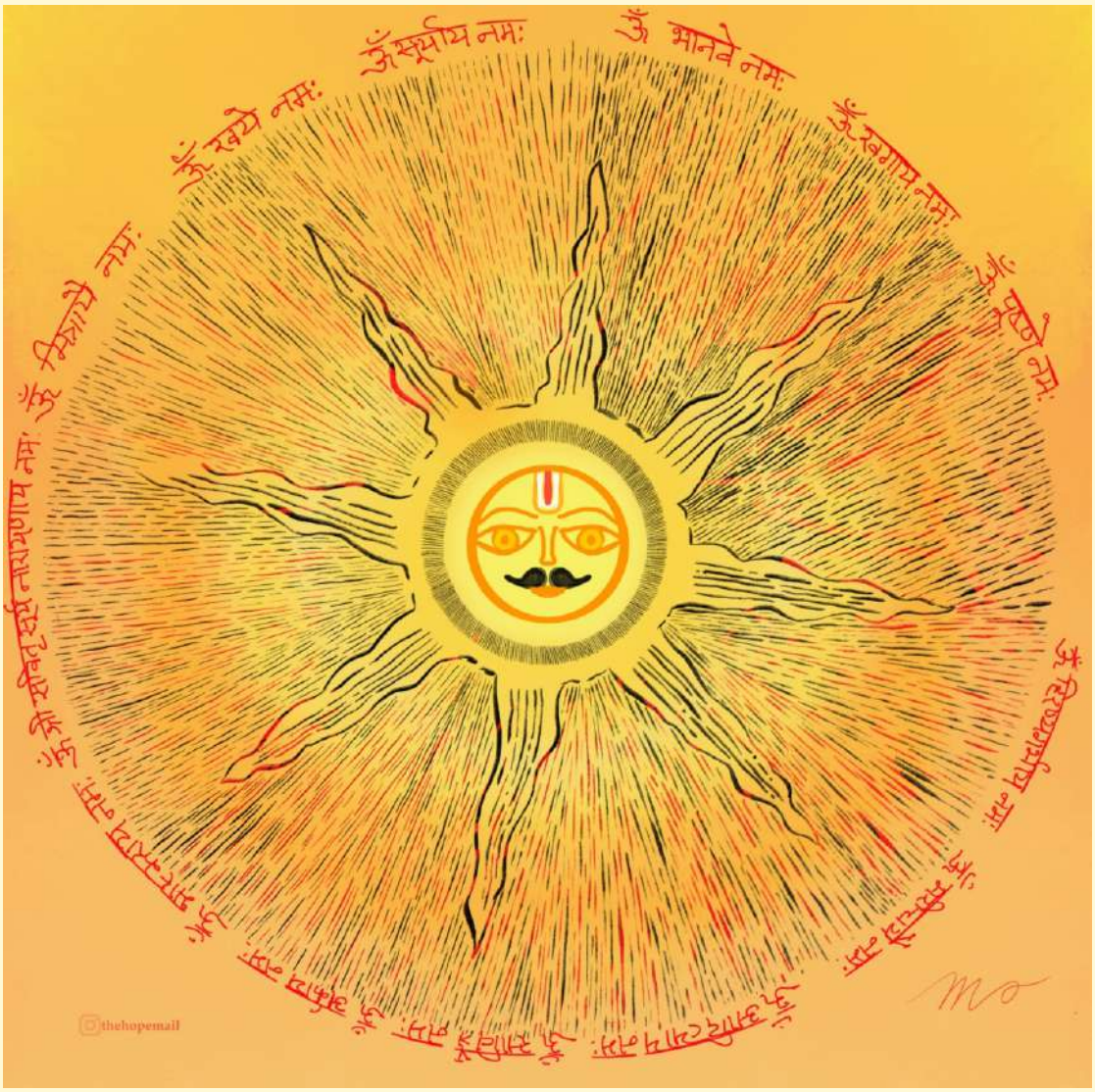

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।।

आप अज्ञान और अंधकार के नाशक, जडता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं, आपका स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।

The artwork depicts the Sun that represents the guiding force and essence of this Panchang. The Sun is the symbol of Lord Shri Ram who we worship and consider as our inspiration. Shri Raghvendra Panchang is a mission dedicated to bringing Sanatan Dharma in everyday lives of people.

Artwork by : **Dr. Mahima Raina**
For more spiritual artwork, please check @thehopemail on Instagram